संजय की कलम से

परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण का महोत्सव
शिवरात्रि

वर्तमान युग समाचार, प्रसार और प्रचार युग है। आज इतनी अधिक संख्या में समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ हैं कि विश्व के कोने-कोने का ही नहीं बल्कि आकाश मण्डल में होने वाले वृत्तांतों का भी झट से समाचार मिल जाता है। रेडियो, टेलीविजन, सेटेलाइट, टेलेक्स, टेलीप्रिन्टर, इंटरनेट आदि के द्वारा झट से सन्देश अथवा समाचार प्रसारित किया जा सकता है।

सब समाचार परन्तु परमात्मा का समाचार नहीं

यह कैसी विडम्बना है कि इतने प्रचुर, विविध एवं सशक्त साधन उपलब्ध होने पर भी मनुष्य को अन्य सभी बातों का समाचार तो मिलता है किन्तु कहीं भी परमपिता परमात्मा का सुबोध परिचय नहीं मिलता। आज 'कौन क्या है?' इस विषय पर डायरेक्टरियाँ छपी हुई हैं जिनमें सभी विशेष, महान अथवा प्रभावशाली व्यक्तियों के नाम और उनका संक्षिप्त परिचय दिया गया है परन्तु कहीं भी सबसे विशेष, सबसे महान, सबसे अधिक प्रभावशाली अथवा अत्यन्त विशिष्ट परमपिता परमात्मा के बारे में तो कुछ भी उल्लेख नहीं है। आग, पुलिस इत्यादि आवश्यक सेवाओं के टेलीफोन नं.सर्वप्रथम दिये हुए हैं परन्तु काम, क्रोध की आग बुझाने वाले, दुख तथा अशान्ति से रक्षा करने वाले परमपिता परमात्मा से कहाँ और कैसे सम्पर्क किया जाये – इसका तो कहीं भी उल्लेख नहीं है! स्पष्ट है कि आज जो सूचना, समाचार या शोध-सामग्री है, उसमें परमात्मा का कुछ भी बोध नहीं है। पशु-पक्षियों, जीव-प्राणियों, वस्तुओं-विषयों पर पुस्तकों के भण्डार भरे पड़े हैं किन्तु परमात्मा के बारे में वैसी ही स्पष्ट, विरोधरहित जानकारी नहीं मिलती। आज कितने ही विषयों पर हजारों-लाखों लोग खोज कर रहे हैं परन्तु किसी के पास भी उस प्रभु का, परमप्रिय परमपिता का तो रहस्य उपलब्ध है नहीं।

भारत के बाहर के मतों पर विचार

यदि भारत से बाहर के देशों और मतों पर विचार करें, वहाँ तो चर्चा ही कुछ और है। ईसाई भाई कहते हैं कि क्राइस्ट भगवान का पुत्र था। अच्छा, यदि वह भगवान का पुत्र था तो भगवान कौन हैं और हमारा उनसे क्या सम्बन्ध है? मुसलमान भाई कहते हैं कि मुहम्मद खुदा का रसूल अथवा पैगम्बर था परन्तु खुदा कौन हैं, कैसे हैं, कहाँ हैं, उनसे हम कैसे सम्पर्क करें, इसकी जानकारी तो कहीं भी नहीं मिलती।

अमृत-सूची

- दैनिक जीवन में आध्यात्मिकता.. *(संपादकीय)* 5
- श्रद्धांजलि.......................8
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के ..9
- खुशी चीजों में नहीं 11
- मजबूर नहीं, मजबूत बनो 13
- प्रेम की पहचान................14
- ज्ञान-प्रकाश से नर-संहार टला 16
- बाबा ने बिल्कुल ही बदल 17
- रंगमंच 18
- व्यसनों से मुक्ति की युक्ति 19
- खुदा का आशियाना 20
- नारी सम्मान...................22
- तू ही शिव निराकार *(कविता)* .24
- आओ अब 'कुमार-कुमारी ...25
- आत्महत्या नहीं, आत्मानुभूति .28
- विशेष सूचना..................29
- नवीनता.......................30
- सचित्र सेवा समाचार 32
- जीवन जीने की नई राह मिली .34

सदस्यता शुल्क

	भारत	विदेश
वार्षिक	100 /-	1,000/-
आजीवन	2,000 /-	10,000/-

शुल्क '**ज्ञानामृत**' के नाम से ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- 'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान, भारत।**

For Online Subscription

Bank Name : State Bank of India
A/c Holder Name : Gyanamrit
A/c No. : 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan
IFSC Code : SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile : 09414006904, 09414423949
Email : hindigyanamrit@gmail.com

अविनाशी खण्ड भारत में सनातन धर्म पर विचार

जब हम इस प्रकार विचार करते हैं तो केवल भारत, जो विश्व का सर्व से प्राचीन खण्ड है, में आदि सनातन धर्म, जो सर्वप्राचीन धर्म है, की ओर हमारा ध्यान जाता है। इस धर्म के जो पूजास्थान हैं, वे अतिप्राचीन हैं। उनमें उनेक पूजनीय मूर्तियों में से मुख्य दस-बारह पूजनीय मूर्तियों पर हम विचार करें और यह जानने की कोशिश करें कि उनमें कोई परमपिता परमात्मा की प्रतिमा है या नहीं।

परमात्मा के बारे में प्राय: लोग चार बातों के बारे में एकमत हैं 1.परमात्मा ज्योतिस्वरूप हैं 2.वे जन्म-मरण से न्यारे हैं। अनादि, अविनाशी और कालातीत हैं। 3.वे सभी के माता-पिता हैं, उनका अपना कोई माता-पिता नहीं है। इससे यह भी निष्कर्ष निकलता है कि न उनका माता (स्त्री) रूप है, न पिता (पुरुष) रूप है और उनकी काया है ही नहीं। जब ऐसा है तो उनकी कोई पत्नी या लौकिक नाते से पुत्र आदि होने का भी प्रश्न नहीं उठता। 4.वे परम पवित्र हैं अर्थात् निर्विकार हैं और ज्ञान, शान्ति, आनन्द, प्रेम आदि के सागर तथा दाता हैं और विश्व के रचयिता, पालक और संहार करने वाले तथा एक कल्याणकारी हैं। वही सदा मुक्त और मुक्ति तथा जीवनमुक्ति के दाता, त्रिलोकीनाथ, देवों के भी देव हैं।

इन चारों बातों को ध्यान में रखते हुए जब हम ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, अम्बा, दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, श्रीकृष्ण और श्रीराम, श्री हनुमान, श्री गणेश आदि की प्रतिमाओं पर नजर डालते हैं तो उपरोक्त चारों बातें किसी पर भी लागू नहीं हो पातीं।

केवल एक ही प्रतिमा ऐसी है जिसे हम अशरीरी (शरीर-रहित) मान सकते हैं। उन्हें ही 'ज्योतिर्लिंगम्' भी कहा जाता है। न वे पुरुष रूप हैं, न स्त्री रूप हैं बल्कि ज्योतिस्वरूप हैं, वह प्रतिमा है शिवलिंग। भगवान शिव विश्व को मुक्ति देने वाले 'मुक्तेश्वर', तीनों लोकों के नाथ होने के कारण 'त्रिभुवनेश्वर' और कालातीत होने के कारण 'महाकालेश्वर' भी हैं। 'बिन्दुरूप' होने के कारण उन्हें ही निराकार भी कहा जाता है और उन्हें ही 'माता-

शिव और शंकर में अन्तर

पिता' भी कहा जा सकता है क्योंकि उनका दिव्य ज्योतिरूप है। उनके दिव्य नाम 'शिव' से ही स्पष्ट है कि वे 'कल्याणकारी' हैं। वही ब्रह्मा, विष्णु और शंकर त्रिदेव के रचयिता अर्थात् 'देवों के देव' भी हैं। अमर देवों के भी नाथ होने के कारण वे 'अमरनाथ' हैं। पुराणवादी लोग मानते हैं कि वे श्रीराम के भी पूज्य 'रामेश्वर' और श्रीकृष्ण के भी पूज्य 'गोपेश्वर' हैं। शोधकर्त्ताओं ने देखा है कि इस रूप की प्रतिमाएँ विश्व भर के लगभग सभी देशों में आज भी मिलती हैं। यही एक सार्वभौम रूप है जो हिन्दुओं, मुसलमानों, ईसाइयों सभी को मान्य हो सकता है क्योंकि आत्मा ज्योतिस्वरूप, बिन्दु रूप है तो अवश्य ही आत्माओं के परमपिता का भी ऐसा ही दिव्य रूप होगा।

शिव और शंकर को एक मानने की भूल

ज्योतिस्वरूप परमात्मा शिव तथा शंकर देवता – दोनों अलग-अलग हैं परन्तु चित्रकारों ने शिव को पुरुष रूप में चित्रित करना शुरू किया तथा 'शिव' और 'शंकर' को एक मान लिया। चित्रकारों को यह भाव व्यक्त करने थे कि शिव ज्ञान-चक्षु वाले हैं, वे 'धर्म' आरूढ़ अथवा स्वधर्म-स्थित हैं, वे त्रिताप को हरने वाले हैं, वे ज्ञान-गंगा धारण किये हुए हैं आदि-आदि। इन सभी भावों को चित्रित करने के लिए उन्होंने शिव को पुरुष रूप देकर, मस्तक में तीसरा नेत्र दिया, बैल पर उनकी सवारी दिखाकर उन्हें धर्म-स्थित

(शेष..पृष्ठ 24 पर)

सम्पादकीय

दैनिक जीवन में आध्यात्मिकता की उपयोगिता

हम प्रतिदिन कई बार स्पिरिट (Spirit) शब्द का प्रयोग करते हैं जैसेकि अमुक व्यक्ति में स्पिरिट बहुत है या अमुक में स्पिरिट है ही नहीं। यह स्पिरिट क्या चीज है? शरीर का कोई बाहरी-भीतरी अंग तो नहीं है, फिर क्या है? जब हम यह शब्द बोलते हैं तब हमारे मन में भाव यह बनता है कि अमुक व्यक्ति में शक्ति, उमंग, उत्साह, उत्प्रेरणा, कर्मठता आदि गुण बहुत हैं। वास्तव में ये सभी गुण आत्मा के गुण हैं। स्पिरिट का शाब्दिक अर्थ है आत्मा। आत्मा के मनन, चिन्तन और अध्ययन को ही कहते हैं अध्यात्म और अंग्रेजी में कहते हैं स्प्रिचुअलिटी (Spirituality) जिसका अर्थ है आत्मा के मूल गुणों को जानना, उनमें स्थित होना, उन मूल गुणों के साथ जीवन में व्यवहार करना और परमात्मा पिता से बुद्धियोग जोड़कर मूल गुणों को बढ़ाना आदि-आदि।

वसुधैव कुटुम्बकम्

हम सभी नारा लगाते हैं, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् सारा विश्व एक परिवार है। हम सब मानवात्माएँ आपस में भाई-भाई हैं। आध्यात्मिकता भी हमें यही सिखाती है कि हम सबका पिता एक परमात्मा है और हम उनके बच्चे हैं, यह विश्व हमारा प्यारा परिवार है। इस मानव-परिवार में आपसी सहयोग होना चाहिए परन्तु है नहीं, क्यों? कारण यही है कि आध्यात्मिकता के सूत्र नारों के रूप में, लिखत और प्रवचनों के रूप में तो बहुत हैं परन्तु व्यवहार में उतरे हुए नहीं हैं। दैनिक जीवन को सुखी, शान्त, समृद्ध, निरोगी, प्रसन्न बनाने के लिए इन सूत्रों को व्यवहार में उतारना बहुत जरूरी है।

छह के लिए पाँच हजार की कुर्बानी

मान लीजिए, एक व्यापारी है। उसे कहा जाता है, आप भी आध्यात्मिक ज्ञान सीखिए, थोड़ा समय निकालकर राजयोग का अभ्यास कीजिए तो उसको लगेगा, मैं किसलिए सीखूँ, कब सीखूँ और वह उत्तर दे सकता है कि मैं कोई संन्यासी थोड़े ही हूँ, मेरे पास फुर्सत कहाँ है, मैं व्यापार करके अपने बच्चे पाल रहा हूँ और मुझे ये सब करने की जरूरत भी क्या है? परन्तु उसे जरूरत है। वह आटे का व्यापारी है और आटे में मिलावट करता है। उसका आटा उसके गाँव के 5000 लोग प्रयोग में लाते हैं। इस व्यापार से वह घर के छह लोगों का पेट पालता है। छह लोगों को जीवन देने के लिए वह 5000 लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करता है। फिर कहता है, मेरे लिए पहले मेरा परिवार है और बाकी सारी बातें बाद में हैं लेकिन सवाल यह है कि वे 5000 लोग उसके कुछ भी नहीं लगते क्या? 5000 लोगों को धीमे-धीमे रोग और अल्पायु की तरफ धकेलकर केवल छह लोगों को जीवन देना – यह तो बड़ा महंगा सौदा है। यह तो हमने एक छोटा उदाहरण लिया लेकिन व्यापार का क्षेत्र 5000 की बजाय 5 लाख, 5 करोड़ या उससे भी अधिक जनता हो सकती है और बात केवल आटे की नहीं है, दवा, मिठाई, कपड़ा...आदि कोई भी जीवनोपयोगी चीज हो सकती है। इस प्रकार का निंदनीय व्यापार करते हुए भी हम कहते हैं कि हमें आध्यात्मिकता अर्थात् मूल्यों की कोई जरूरत नहीं है।

आध्यात्मिकता हमें बताती है कि जैसे हमारे घर के छह लोग हैं वैसे ही गाँव के 5000 या विश्व के अन्य लोग भी हैं। उनके खून का रंग भी लाल है, वे भी स्वस्थ रहना चाहते हैं, वे भी भगवान के बच्चे हैं, तो हम इन छह के लिए इतनों की हंसी-खुशी को कुर्बान क्यों कर रहे हैं? फिर हम शिकायत करते हैं कि समाज में मूल्य नहीं हैं, ईमानदारी

नहीं है, कोई सुरक्षित नहीं है। चोरी, हिंसा, शोषण का बाजार गर्म है। कारण यही है कि आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को जीवन में धारण करने की दृढ़ता हम नहीं दिखाते। उनके अभाव में असुरक्षा, झूठ, अभिमान आदि दिनोंदिन फल-फूल रहे हैं।

शक्ति हाथ से निकल जाने पर क्या कर पाएँगे ?

केवल व्यापार नहीं, प्रशासन या अन्य क्षेत्रों में भी ऐसा हो सकता है। मान लीजिए, पच्चीस वर्ष के एक सरकारी अधिकारी की तहसील मुख्यालय में नियुक्ति हुई है। उसका भी यही विचार है कि अभी तो मुझे मौज-मजे करने दो, बूढ़ा होकर आध्यात्मिक बन जाऊँगा। परन्तु बुढ़ापे में उसके आध्यात्मिक ज्ञान लेने से किसी को भी फायदा होने वाला नहीं है। उस तहसील के कुछ गाँवों में बरसात के पानी से खेतों की खड़ी फसल बरबाद हो गई है। किसान बहुत परेशान हैं। कइयों पर कर्ज भी है। एक गरीब किसान दो बसें बदलकर तहसील मुख्यालय में इस अधिकारी को इस स्थिति की जानकारी देने और प्रशासन से मदद मांगने आया है और चपरासी से अपनी बात अन्दर पहुँचाने का निवेदन करता है। चपरासी कहता है, साहब तो व्यस्त हैं। किसान अन्दर झाँककर देखता है और पाता है कि बड़े-बड़े व्यापारी, धनाढ्य व्यक्ति उसे घेर कर बैठे हैं। कुछ खाना-पीना भी चल रहा है। कोई उसे किसी उद्घाटन के लिए, कोई पारिवारिक पार्टी में शामिल होने का निमन्त्रण देने आया है। सुन्दर-सुन्दर सौगातों का लेन-देन हो रहा है। अन्दर हँसी के ठहाके गूँज रहे हैं और बाहर किसान मन मसोसकर बैठा है। वह पुन: चपरासी को कहता है, मेरे लिए साहब से समय लेकर आओ ना। चपरासी के पूछने पर साहब कहता है, आज किसी कारखाने का उद्घाटन है, कल आ जाना। गरीब किसान अगले दिन पुन: दो बसें बदलकर आता है और देखता है कि साहब तो छुट्टी पर हैं। यह बताया भी नहीं, मैं छुट्टी पर रहूँगा। तीसरे दिन दोपहर बाद जैसे-तैसे उसने किसान को समय दिया और जल्दबाजी में उसकी बात सुनकर ऊपरी आश्वासन दे दिया कि देखेंगे, स्थिति का जायजा लेकर मदद जरूर करेंगे। किसान तो लौट गया। इस अधिकारी ने अपने हर कार्यक्षेत्र में यही रवैया अपनाया। जरूरतमंदों को उपेक्षित किया, पार्टियाँ करता रहा पर किसी की मदद कर उसे सन्तुष्ट नहीं किया। अब सेवानिवृत्त होकर आध्यात्मिक बनने की कोशिश में प्रवचन सुनने लगा। उनमें यही सुना कि गरीब-अमीर को समदृष्टि से देखना चाहिए, महिलाओं का सम्मान करना चाहिए, अनपढ़, गरीबों की पहले मदद करनी चाहिए, किसी के धन-दौलत, सौगातों के प्रभाव में नहीं आना चाहिए और अपना कर्त्तव्य निष्पक्ष भाव से पूरा करना चाहिए। विचार कीजिए, अब इस प्रवचन को सुनकर यह व्यक्ति क्या करेगा? यह प्रवचन इसे कब सुनना चाहिए था? जब 25 साल की आयु में यह अपने पद पर आसीन हुआ था। जब गाँव के लोग दुखी होकर इसकी शरण में आ रहे थे और इससे मदद की कामना कर रहे थे तब सुनना चाहिए था। अब जब हाथ से शक्ति निकल गई, कुर्सी छूट गई, तब प्रवचन सुनकर किनका भला कर पाएगा? जब शक्ति हाथ में थी तब यह सेवा क्यों नहीं की? जब कार सड़क पर चल रही है तब तो उसकी डेन्टिंग-पेन्टिंग का फायदा है। बिगड़ने पर जब वह स्थाई रूप से गैरेज में डाल दी गई तब उसकी साज-सज्जा का क्या लाभ?

व्यक्ति 21 वर्ष तक नाबालिग है और 60 के बाद वृद्ध अर्थात् सेवानिवृत्त है। तो सेवाकाल तो 21 से 60 वर्ष तक ही है। परन्तु इस समय के लिए वह कहता है कि मैं तो बाल-बच्चे, घर-परिवार सम्भाल रहा हूँ पर बिना नैतिक-आध्यात्मिक मूल्यों के घर-परिवार सम्भालेगा कैसे?

मन दिखता नहीं, उसे संवारते नहीं

एक छोटा बच्चा कुछ दिन स्कूल जाने के बाद शरीर के सभी अंगों के नाम हिन्दी और अंग्रेजी में अच्छे से जान जाता है पर क्या वह जान पाता है कि उसकी आत्मा और मन कहाँ हैं? नहीं। क्यों? क्योंकि ना ही घर में

अभिभावकों ने और ना ही स्कूल में अध्यापकों ने मन और आत्मा के बारे में समझाया। वे खुद भी इस बारे में अनभिज्ञ हैं। एक माँ, सुबह बच्चे के उठने पर उसका मुख, आँखें कई तरह के खुशबूदार साबुनों से धोती है पर क्या मन को भी धोने की कोशिश करती है? नहीं। क्योंकि उसने स्वयं का मन भी कभी नहीं धोया। मन किसी को दिखता नहीं इसलिए कोई टोकता नहीं कि तुम्हारा मन गन्दा है। हम केवल दिखने वाली चीजों को संवारते हैं। बच्चा थोड़ा बड़ा हुआ, घर से बाहर जाने लगा तो माँ ने कहा, बेटा तुम्हारे बाल उलझे हुए हैं, बाल ठीक करके बाहर जा। कभी नहीं कहती कि तेरा मन उलझा हुआ है, इसे भी सुलझा ले। चाहे वो गुस्से में बाहर निकले, अपशब्द उच्चारता हुआ बाहर निकले, अधीरता और चंचलता के साथ बाहर निकले, नफरत और बदले की भावनाओं के साथ बाहर निकले – इसकी कोई चिन्ता और सम्भाल नहीं। थोड़ा बड़ा होने पर बाल ठीक करने की दुकानों का पता लगाकर बच्चा वहाँ बाल आदि ठीक कराने लगा पर मन को ठीक करने वाले स्थानों का पता लगाया? नहीं। बालिग होते-होते उसकी ड्रेस सुन्दर, बाल सुन्दर, पढ़ाई की डिग्री... सब कुछ सुन्दर होता गया लेकिन मन का रूप-स्वरूप तनावग्रस्त, अवसादग्रस्त, क्रोध, लोभ, अहंकारग्रस्त होता गया। ऐसे उलझे हुए मन वाले नौजवान को किसी भी कार्यक्षेत्र में लगाएंगे तो वह क्या कर पाएगा? गृहस्थी की गाड़ी से जोड़ेंगे तो भी क्या करेगा?

घोड़े की तरह मन को साधना जरूरी

पहले जमाने में घोड़े को गाड़ी में जोतने से पहले साधा जाता था। जंगल में गोलाकार रास्ता बनाकर, मालिक घोड़े की नकेल पकड़कर चलाता था। फिर नकेल छोड़ देने पर भी घोड़ा अपने आप उसी रास्ते पर चलता रहता था। तब कहते थे, यह सध गया है, इससे काम लिया जा सकता है, अब यह काम बिगाड़ेगा नहीं। यदि न साधा जाए तो कभी वह पाँव रोपकर खड़ा हो जाता था और कभी पीछे गाड़ी जोतने पर अपने आगे वाले पाँव ऊपर उठाकर गाड़ी पलट देता था। मानव मन को भी घोड़े की तरह साधने की जरूरत है। साधना अर्थात् राजयोग की साधाना द्वारा उसे मूल्यों के पट्टे पर चलाना। यदि ऐसा नहीं किया जाता है तो मानवीय मन भी कई बार लोभ-लालच और दिखावे के वश अपने पाँव रोपकर खड़ा हो जाता है जैसेकि यदि कार नहीं दोगे तो फेरे नहीं फिरूँगा, स्कूटर नहीं मिलेगा तो पत्नी को छोड़ दूँगा। गृहस्थी की गाड़ी चलाने से पहले ही यह मन रूपी घोड़ा अड़ गया और कई बार गृहस्थी की गाड़ी को चलाना आरम्भ कर लेता है तो भी उसे व्यसनों के वश या अन्य विकारों के वश पलट देता है। उसके आश्रित बूढ़े माता-पिता, बीबी-बच्चे जिन्दगी के बीच रास्ते में अटक जाते हैं। ऐसा क्यों होता है? क्योंकि मन को नहीं संवारा, मन को नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य नहीं सिखाए। श्रम करना नहीं सिखाया।

काल का असामयिक प्रहार

आए दिन हम समाचार पढ़ते-सुनते हैं कि अमुक नौजवान पंखे से लटक गया, अमुक रेल के नीचे आ गया, अमुक परिवार की महिला बच्चों सहित जहर खाकर मर गई आदि-आदि। सोचने की बात है कि अकाल मृत्यु का ग्रास बनने वाले इन नौजवान नर-नारियों के आध्यात्मिक ज्ञान लेने का समय (समाज की सोच के अनुसार) तो 60 साल के बाद आना था पर काल के मुँह में जाने का समय तो 20 से 60 के बीच में ही आ गया। यदि हमने नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को घूँटी के साथ पिलाया होता तो काल के इस असामयिक प्रहार से इन्हें अवश्य बचाया जा सकता था। आध्यात्मिक और नैतिक मूल्य मानव को रास्ते में आने वाली रुकावटों को सीढ़ी बनाकर ऊपर चढ़ना सिखा देते हैं और अन्धकार के बाद उदय होने वाले सूर्य की तरह ही, निराशाओं के पार प्रकाश की किरणों की उपस्थिति का अनुभव करा देते हैं। अत: हम इन मूल्यों को जीवन के हर श्वास में, हर संकल्प में पिरो लें।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

श्रद्धांजलि

हम सबके अति स्नेही, साकार मात-पिता के हाथों पले, बापदादा के दिलतख्तनशीन, यज्ञ-सेवाओं के आदि रत्न, अथक और निरन्तर सेवाधारी, तन, मन, धन, समय, श्वास सहित पूर्ण यज्ञ-समर्पित, दधिचि ऋषि समान हड्डी-हड्डी विश्व सेवार्थ स्वाहा करने वाले, ओजस्वी वाणी के धनी, सदा बेहद सेवा के चिन्तन में रहने वाले आदरणीय भ्राता लक्ष्मण जी सन् 1957 में ईश्वरीय ज्ञान में चले और तभी से ईश्वरीय सेवा में संलग्न हो गए। लौकिक रूप से आप शिक्षक थे और पदोन्नत होकर शिक्षा-अधिकारी बने। जहाँ-जहाँ आपका तबादला हुआ, उस-उस क्षेत्र की अनेकानेक आत्माओं में ज्ञान का बीज बोने, गीता-पाठशालाएँ और सेवाकेन्द्र खोलने के आप निमित्त बने। आप प्रोजेक्टर और प्रदर्शनी से गाँव-गाँव सेवा करते थे जिसकी महिमा प्यारे बाबा समय प्रति समय साकार मुरलियों में करते हैं। आपके पढ़ाए हुए बहुत सारे विद्यार्थी, जो ईश्वरीय ज्ञान से लाभान्वित हुए, अनेक स्थानों पर बाबा की सेवाओं में मददगार और सहयोगी का पार्ट बजा रहे हैं।

आपका सारा ही लौकिक परिवार (पिताजी, माताजी, लौकिक युगल, छोटे तीन भाई, छोटी एक बहन, छोटे भाई के बच्चे) यज्ञ में समर्पित और सहयोगी हैं। बाबा आपके परिवार को योगियों का गुलदस्ता कहते थे। ज्ञानामृत तथा वर्ल्ड रिन्युवल के सम्पादक भ्राता आत्मप्रकाश जी आपके छोटे भाई हैं। अमृतसर सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु.राज बहन आपकी छोटी बहन हैं।

प्रारम्भ से ही यज्ञ की बेहद सेवाओं में आपका सक्रिय योगदान रहा। जब प्रेस देहली में थी तब भ्राता जगदीश जी के साथ आपने विभिन्न प्रकार के साहित्य और पत्रिकाएँ प्रकाशन में अथक योगदान दिया। आप अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ इतिहास के अच्छे ज्ञाता थे। अपनी पाई-पाई यज्ञ-सेवा में सफल करते हुए आपने बहुत सादा पर उच्च विचारों के साथ जीवन जीया।

सोनीपत के समीप यज्ञ को मिली लगभग 40 एकड़ जमीन को निर्माण कार्य के लिए निर्विघ्न बनाने में आपने अथक प्रयास किया और सफलता पाई। आपका आत्म पंछी शायद इसी सफलता के इंतजार में था। सूचना आने के चंद दिनों बाद ही आप 08-01-2017 को शाम 4 बजकर 6 मिनट पर अव्यक्त बापदादा की गोद में चले गए। जीवन भर सेवा देने वाली आप आत्मा ने अन्त में भी बहुत कम सेवा ली और आगे की सेवाओं पर तत्पर हो गए। आपकी शारीरिक आयु 87 वर्ष थी। ऐसे स्नेही, अथक सेवाधारी, त्यागी, तपस्वी, एकनामी और एकोनोमी के धनी, महान आत्मा को पूरा दैवी परिवार श्रद्धा-सुमन अर्पित करता है। ❖

लक्ष्मण भाई अपने लौकिक परिवार के साथ

लक्ष्मण भाई एवं परिवार दादी जानकी एवं जयंती बहन के साथ

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

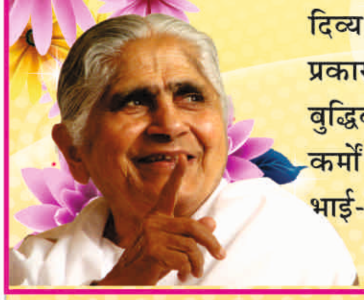

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्नः- मन और तन का आपस में क्या सम्बन्ध है?

उत्तरः- जहाँ मेरा तन है वहीं मन है, तो हल्का है। मन कहीं और जगह, तन यहाँ तो यह बहुत गम्भीरता वाली बात है। हरेक अपने आपको चेक करे, एक घण्टे के अन्दर मन कहाँ-कहाँ गया? तन यहाँ है तो मन भी यहाँ है ना। यह नेचुरल हो। मैंने भक्तिमार्ग का अनुभव किया है, वहाँ कभी भी मन शान्त नहीं हुआ। मन को शान्त करने के लिये बहुत यात्रायें की। कोई खराब बातों में मन नहीं भटकता था पर शान्त नहीं होता था। अभी आपको भी जिस घड़ी खिंच होती है, तो मन एकदम शान्त हो जाता है। मन शान्त है तो बुद्धि वही संकल्प करेगी जो सेवा अर्थ होगा। यह बहुत अच्छा ज्ञान है।

प्रश्नः- ब्रह्मावत्सों की वाणी की क्या विशेषता हो?

उत्तरः- राजयोग का सबूत है धारणा। हमारा योग किसके साथ है? श्रीमत सिरमाथे पर है। मनमत, परमत के प्रभाव या झुकाव से मुक्त हो गये। कदम-कदम पर श्रीमत पर चलने की नेचुरल नेचर हो जाये। हरेक अगर ऐसा पुरुषार्थ करते हैं, तो वातावरण और वायुमण्डल बहुत अच्छा रहता है। हम ब्रह्मावत्स हैं, हमारे बोलचाल में देवताई मिठास होनी चाहिए। समझो, अभी ही हम देवता हैं, तो क्या बात करेंगे और कैसे बात करेंगे? कुछ व्यर्थ आयेगा ही नहीं। भगवान के बच्चे बनने के साथ-साथ भगवान को भी अपना बच्चा बनाने का अनुभव है? मुझे वर्सा देता है तो मैं बच्चा हूँ, पर मेरे पास क्या है, जो मैं कहूँ, बच्चे, ये ले लो। मेरे पास कुछ नहीं पर सम्बन्ध में उसको बच्चा बनाया तो सब कुछ उसका है। बहुत लम्बे समय से एक बाबा से ही हर सम्बन्ध की भासना आती है। वही माता-पिता, शिक्षक, सखा, सतगुरु है। बच्चा भी है। देखो, बाबा कैसे देख रहा है और हम कैसे देख रहे हैं। बाबा की दृष्टि महासुखकारी है।

प्रश्नः- पद्मापद्म भाग्यशाली बनने के लिए आधार क्या है?

उत्तरः- पहले-पहले आत्मा का ज्ञान मिला। आत्मा में मन-बुद्धि-संस्कार हैं। मन शान्त है, बुद्धि शुद्ध है, संस्कार भी भविष्य सतयुगी बहुत अच्छे हैं क्योंकि यह अलौकिक जन्म है। ब्रह्मा माँ ने हमको नया जन्म दिया है जिससे बाप (भगवान) को पहचाना है। बाप कौन है? कैसा है? सारा दिन और रात के स्वप्नों में भी अनायास ही दिल से निकलता है – बाबा। वही हमारी माँ भी है, बाप भी है परन्तु वन्डर यह भी है कि वही हमारा शिक्षक भी है इसलिए बाबा बहुत अच्छा लगता है। पढ़ाई इतनी ऊँची, अच्छी है। ड्रामा हमारी माँ है, शिव हमारा बाप है। कुछ भी बात होती है ना, ड्रामा। बना बनाया है इसलिए अडोल-अचल रहते हैं। संगमयुग बहुत वैल्युएबल है। हमेशा यह भान आता है, बाबा हमारे साथ है और नॉलेज बुद्धि में है, तो भाग्य हमारे हाथों में है। कर्म ऐसे करें जो भाग्य, फिर सौभाग्य, हजार गुणा भाग्य, लाख गुणा भाग्य, तो हम पद्मापद्म भाग्यशाली बन जाते हैं।

प्रश्नः- कैसे पता पड़े कि शिव बाबा से हमारा बहुत प्यार है?

उत्तरः- मुख्य बात है, हमारे आपसी सम्बन्धों में मनमत या

परमत नहीं है, तो सबको बहुत खुशी होती है। मनमत या परमत को छोड़ श्रीमत सिरमाथे पर है। कोई-कोई हमें मिलने आते हैं, तो कहते हैं, यहाँ (सिर पर) हाथ लगाओ, हाथ रखो। साधु-संत या बुजुर्ग लोग पीठ पर भी हाथ रखते हैं। दिल खुश, दिमाग ठण्डा, स्वभाव सरल हो तो जहाँ रहो सब खुश हैं। बाबा को देखते-देखते मस्तक चमकने लगता है। कोई-कोई भाई-बहनें अन्दर से बाबा को कितना प्यार करते हैं, वो उनके चेहरे की खुशी से पता पड़ता है। कुछ भी होता है, लगाओ बिन्दी तब तो खुश रह सकेंगे और दिल से 'वाह बाबा' निकलेगा। मेरा जी चाहता है, यह बात सबके दिल से निकले। बाबा की दृष्टि उड़ता पंछी बना देती है। पाँव भी धरती से ऊपर उठने लगते हैं जैसेकि पंख आ जाते हैं।

प्रश्नः- कर्म अच्छे बनें, उसकी युक्ति क्या है?

उत्तरः- कलियुग अब जाने वाला है, यह पक्का है ना! निमित्त मात्र यहाँ बैठे हैं इसलिए कि सतयुगी संस्कार बन जायें। कोई जन्म में लक्ष्मी, कोई जन्म में नारायण बनेंगे। हर जन्म में थोड़ेही नारायण बनेंगे। जैसी करनी वैसी भरनी। एक बाबा की याद से, दृढ़ संकल्प से कर्म अच्छे हो जाते हैं। कर्मों की गति अति न्यारी है। बाबा का प्यारा बनने के लिए अटेन्शन है कि हमारे कर्म अनेकों को आगे बढ़ाने वाले हों। हमारे कर्मों द्वारा कई आत्माओं को 'कहाँ जाना है? क्या करने का है?' यह स्पष्ट हो जाता है। 'करे कराये आपेही आप, मानुष के कुछ नाहीं हाथ...' ये अक्षर भले भक्तिमार्ग के हैं पर मुझे एक्यूरेट लगते हैं क्योंकि मनुष्य अगर अपने को मनुष्य समझता है, भाई है या बहन है तो अभिमान हो जाता है। भले तन मनुष्य का है पर संगमयुग पर वही करता भी है, कराता भी है।

प्रश्नः- शान्तिवन में रहते आप क्या महसूस करती हैं?

उत्तरः- साक्षी होकर अपने को देखो। हम सब यहाँ (शान्तिवन में) साक्षी होकर बैठे हैं। बाबा सकाश दे रहे हैं, सच्चाई, प्रेम भरी सकाश, चारों ओर लाइट-माइट अपना काम कर रही है। हम तो बैठे हैं। हमको सिर्फ लाइट रहना है। लाइट रहने से, अशरीरी बनकर रहने से बहुत अच्छा लगता है। यहाँ ही बैठे रहें, ऐसा दिल करता है। शान्तिवन में बैठ साक्षी हो करके देखते हैं तो लगता है कि ऐसा स्थान विश्व में कहीं नहीं है। यहाँ से वायब्रेशन विश्व में जा रहे हैं। विश्व की आत्मायें आ करके हमको यह अनुभव बता रही हैं। यहाँ संगठन का ऐसा वायुमण्डल है जो सबको कशिश (खेंच) होती है इसलिए जहाँ हमारा मन होगा, वहाँ हमारा तन होगा। मन बड़ा अच्छा खुश हो गया, भटकना छोड़ दिया। संकल्प शुद्ध, मन शान्त, दृष्टि-वृत्ति बड़ी अच्छी है, माना बदल गए हैं।

प्रश्नः- डायमण्ड हॉल देखकर आपके मन में क्या आता है?

उत्तरः- सारे कल्प में और कोई ऐसा समय नहीं है, जो हमारे अन्दर से यह आवाज निकले, कमाल है बाबा की। शिवबाबा ने ब्रह्माबाबा को कहा, तू मेरा है। उसने भी कहा, तू मेरा है। यह बहुत अच्छी सीन है। इन दोनों का आपस में प्रेम देख करके हम आशिक हो गये हैं। वो हमारा माशूक हो गया। अभी आशिक-माशूक जो शब्द हैं इनमें लज्जा की बात नहीं है। सभी का माशूक एक है, हम सभी उसके ऊपर आशिक हुए हैं। ये आँखें बाबा को देख करके बहुत अच्छी हो गयी हैं इसलिए मैं सिर्फ पढ़ते समय ही चश्मा लगाती हूँ। बाबा की सूरत-सीरत इतनी अच्छी वन्डरफुल है। प्यार का सागर, शान्ति का सागर, आनन्द का सागर... ऐसा मेरा बाबा है ना। जब यह डायमण्ड हॉल फुल होता है तो हम दादियों को नशा चढ़ता है। पता था क्या कि यह डायमण्ड हॉल छोटा पड़ जायेगा? सारे कल्प में अभी संगमयुग पर यह बड़े से बड़ा तीर्थस्थान है, बहुत पवित्र स्थान है। ❖

खुशी चीजों में नहीं, आत्मा में है

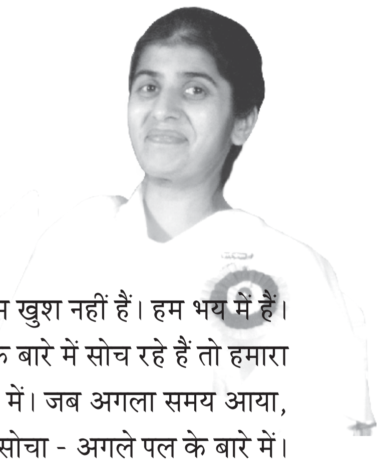

ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन, गुरुग्राम (हरियाणा)

कौन-सी ऐसी बात है जो हमारी खुशी को हमसे छीन लेती है या हम खुश नहीं रह पाते हैं। सबसे बड़ी बात है बीते हुए समय के अनुभव। बीता हुआ कल जिसे हमने पकड़कर रखा हुआ था, खुशी को प्रभावित कर रहा था। जब हमने उसे छोड़ दिया या जब उसे वर्तमान बनने नहीं दिया तो हम अपनी खुशी को फिर से निर्मित कर पाये।

भूतकाल की तरह, हम भविष्य में भी बहुत ज्यादा जीते हैं क्योंकि कहीं न कहीं खुशी को हम भविष्य में ढूंढ़ते हैं। हमने यह स्वीकार कर लिया है कि हमारे पास जब अमुक वस्तु होगी तभी खुशी मिलेगी। हमारा सारा ध्यान इसी पर होता है कि जब यह होगा तब खुशी मिलेगी। जब यह विचार आता है तो साथ में यह भी आता है कि अगर नहीं हुआ तो! यह सिर्फ भय है। जब हमारी खुशी किसी चीज़ पर निर्भर हो जाती है तब भय स्वत: ही आ जाता है क्योंकि जहाँ निर्भरता है वहाँ भय की भावना तो होगी ही।

हम कितनी भी कोशिश कर लें, भय का एक विचार आ ही जायेगा। खुशी और भय दोनों कभी भी एक साथ नहीं हो सकते हैं। खुशी के साथ-साथ हम भय के संकल्प करना शुरू कर देते हैं कि अगर वो नहीं कर पाये तो, अगर कल वो मेरे साथ नहीं हुये तो। हमें नौकरी छूटने का भय रहता है, सम्पत्ति छिन जाने का भय रहता है, परिवार के किसी सदस्य को खोने का भय रहता है और सबसे ज्यादा भय यह होता है कि कहीं मुझे ही कुछ न हो जाये।

यह पता है कि प्राप्त चीजें एक न एक दिन जानी ही हैं लेकिन उनका सुख प्राप्त करने की बजाय हम पूर्वानुमान करके भय में जीना शुरू कर देते हैं कि ये चली गई तो...। लेकिन खुशी हमारी अपनी रचना है, वह चीजों में नहीं है, वह हमारे अंदर ही है।

जब हम सोच रहे हैं कि यह होगा तो खुशी होगी इसका मतलब है कि इस समय हम खुश नहीं हैं। हम भय में हैं। जब हम आने वाले समय के बारे में सोच रहे हैं तो हमारा यह समय कैसा बीता? डर में। जब अगला समय आया, तब कौन से पल के बारे में सोचा - अगले पल के बारे में। ऐसे करते-करते पूरी यात्रा किसमें बीतती है? भय में।

हमने सोचा था कि एक साल के अंदर ये होगा। अलग-अलग तरह से हम भविष्य के बारे में सोचते हैं। जो लोग बहुत चिंता करते हैं वे किसके बारे में सोच रहे होते हैं, भविष्य के बारे में सोच रहे होते हैं। अगर ये हुआ तो...। सिर्फ एक दिन जांच करना चिंता की। हम आने वाले समय के बारे में, भविष्य के बारे में एक तस्वीर बना लेते हैं और जब तस्वीर अच्छी नहीं होती तब चिंता होने लगती है। चिंता माना कुछ बुरा होने वाला है, चिंता माना ये विचार नहीं आयेगा कि कुछ अच्छा होने वाला है। चिंता मतलब कुछ दुर्घटना, कुछ गड़बड़ होने वाला है। वो तस्वीर हम अभी बना लेते हैं और इसी पल से उस तस्वीर को देख-देख कर डरते रहते हैं और उस तस्वीर का उपयोग वर्तमान में करने से वर्तमान भी दर्द में बीतता है। हमारे प्रत्येक क्रियाकलाप का प्रभाव अगले कार्य पर पड़ता है जिसके कारण दर्द की अनुभूति आगे बढ़ती जाती है क्योंकि मैंने दर्द देने वाले दृश्य को बनाया है।

कल्पना करने वाला व्यक्ति शरीर से यहाँ है लेकिन मन से आने वाले कल में है जिसे हम कहेंगे कि ये तो ख्वाबों में ही रहते हैं। अब प्रश्न उठता है कि हम ख्वाबों में क्यों रहते हैं? क्योंकि हमको आज (वर्तमान) पसंद नहीं है।

मेरे अंदर दर्द है। मैं उस दर्द के ऊपर काम करके समाधान नहीं करना चाहती हूँ लेकिन अन्दर में अच्छा महसूस करने के लिए चाहे टी.वी.देखती हूँ, चाहे छुट्टियों पर चली जाती हूँ। दर्द वाली सोच को थोड़ी देर के लिए

नजरअंदाज कर देती हूँ जिससे कि मैं अच्छा अनुभव करूँ। मानलो, अभी मैं दर्द में हूँ लेकिन पंद्रह मिनट मैं भविष्य के बारे में सोचती रही। तो पंद्रह मिनट क्या हुआ? वर्तमान में मैं अपने दर्द वाले विचारों से दूर हो गई और भविष्य की कल्पनाओं में खो गई, इससे मुझे अच्छा अनुभव हुआ।

आज बहुत दर्द में हूँ लेकिन पिछला साल बहुत अच्छा बीता था। चलो पिछले साल को याद करके मुझे अच्छा लगता है, दस मिनट याद किया, बहुत अच्छा लगा। ग्यारहवें मिनट वर्तमान याद आया, दर्द हो गया। दर्द वर्तमान में है तो मुझे उसको ठीक भी कहाँ करना पड़ेगा? वर्तमान में ही करना पड़ेगा। यदि मैं दर्द से भागती रहूँ तो इससे दर्द ठीक नहीं होगा, यह कोई समाधान नहीं है। यह तो बीमारी है, इसे ठीक करना चाहिए, न कि इससे भागना चाहिए।

क्या ख्वाबों की दुनिया में जीने से बीमारी या दर्द ठीक हो जायेगा? आज अगर उसको ठीक नहीं किया और हम सोचें कि ये कल ठीक हो जायेगा, तो क्या वो ठीक हो जायेगा? आज अगर हम दर्द में हैं, आज हमने अपने विचारों को ठीक नहीं किया तो कल कौन-सी सोच होगी? वही दर्द वाली होगी।

हम क्यों कल के बारे में सोचते हैं? हमने सोचा कि खुशी परिस्थितियों पर निर्भर है। आज परिस्थिति ठीक नहीं है, मैं दर्द में हूँ लेकिन मैं आशा करती हूँ कि कल परिस्थिति ठीक हो जायेगी और मैं यह निष्कर्ष निकाल लेती हूँ कि परिस्थिति ठीक हो जायेगी तब मैं खुश हो जाऊँगी। मान लो, कोई बहुत गरीब है, आज उसके पास धन नहीं है, हो सकता है, कल उसके पास बहुत धन आ जाये, बहुत अच्छा। इसका यह मतलब नहीं है कि उसके पास खुशी भी आ जायेगी। खुशी मन की रचना है। हमें उसे हर पल अनुभव करना होगा। अगर हमने आज उसको निर्मित नहीं किया तो मेरा कल भी स्वत: ही दर्द का आयेगा।

भविष्य के बारे में बहुत ज्यादा सपने देखना, वर्तमान से भागना है। मैं अपनी ऊर्जा को, अपनी क्षमता को उस चीज को निर्मित करने में उपयोग कर रही हूँ जो कि मेरे वश में है ही नहीं। मेरे वश में सिर्फ वर्तमान है। इसके अलावा मेरे वश में कुछ भी नहीं है।

आज आप अच्छा महसूस कर रहे होंगे, घर पहुँचेंगे, सबके साथ अच्छे होंगे, रात को नींद अच्छी आयेगी, कल सुबह उठेंगे तो अच्छा ही अनुभव करेंगे। यदि आज का समय चिंता में बिता दिया तो कल क्या होगा? कल भी चिंता ही होगी। यदि कल वो व्यक्ति या चीज आयेगी जिसने मुझे खुशी देनी है तो भी अगर मैंने चिंता पैदा की तो कल भी मेरी मानसिक स्थिति कैसी होगी? कल मेरे पास एक और कल है ना, चिंता करने के लिए। अगर मेरी चिंता करने की आदत बन गयी है तो दिन की समाप्ति भी चिंता के साथ ही होगी। किसी ने सच ही कहा है कि हम पूरा जीवन उन बातों को सोच कर बिता देते हैं जो वास्तव में हुई ही नहीं हैं। फिर हम कहते हैं, इसलिए मैं चिंता करता हूँ कि मैं अपना ध्यान रख सकूँ। हमने चिंता के साथ सावधानी को भी जोड़ दिया। सावधानी तो प्यार है, स्नेह की शक्ति है और चिंता भय की शक्ति है। भय और स्नेह इकट्ठे नहीं हो सकते।

ये जो भविष्य की चिंता करने की आदत है, उससे हम वर्तमान में भी डर से जीते हैं। इससे हमारी बहुत सारी ऊर्जा खत्म हो जाती है और हमारा वर्तमान दर्द में बीतता है। राजयोग हमें यह बताता है कि बाहर की कोई भी चीज खुशी नहीं दे सकती। मुझे बाहर से कुछ भी नहीं चाहिए जिससे मैं पूर्ण हो जाऊँ। मैं सदा सम्पन्न हूँ, संपूर्ण हूँ, भरपूर हूँ और सुंदर हूँ। यही यथार्थ है। इस अवधारणा को जीवन की यात्रा में साथ लेकर चलना है। जैसे ही विचार आये कि 'ये होगा तो मुझे अच्छा लगेगा', विचार करें कि मुझे पहले से ही अच्छा लग रहा है। हाँ, ये हो तो बहुत अच्छा लेकिन मेरी अनुभूति इसके होने पर निर्भर नहीं है। एक दिन इसको करके देखो। आप अचानक बहुत-बहुत हल्के या उपराम अनुभव करेंगे। ❖

मजबूर नहीं, मजबूत बनो

ब्रह्माकुमारी विटोली माता, गोलागोकरन नाथ (खीरी), यू.पी.

बात जुलाई, 1991 की है, मेरे लौकिक युगल (स्व.श्रीरामनिवास) को ईश्वरीय ज्ञान अपने एक शिक्षक साथी से प्राप्त हुआ। कुछ दिनों के पश्चात् मैं भी नित्य क्लास में जाने लगी।

साक्षात्कार में देखा बम विस्फोट

अक्टूबर, 1992 में मुझे पहली बार मधुबन (आबू पर्वत) में शिव बाबा से मिलने का मौका मिला। हम सभी एकदम अशरीरी अवस्था में ओमशान्ति भवन में बैठे थे। अव्यक्त बापदादा की पधरामणि के बाद मुझे साक्षात्कार हुआ जिसमें मैने बम विस्फोट में मेरे युगल की मृत्यु देखी। यह देख मैं सिर्फ रो रही थी, कुछ बोल नहीं पा रही थी। इतने आँसू आए कि मैं सारी गीली हो गई। यह दृश्य देख मेरी साथी बहन ने मुझे हिलाया, पूछा, क्या हो गया? तब मेरी चेतना लौटी किन्तु मैं कुछ बोल नहीं सकी, केवल बाबा को देखती रही। तत्पश्चात् मुझे अनुभव हुआ कि बाबा कह रहे हैं, ''तुम्हारी परीक्षा होने वाली है, तुम्हें फुल पास होना है, मजबूर नहीं, मजबूत बनना है, बच्चे, अवस्था ऐसे ही बनाये रखना।'' हम सभी बाबा से मिलन मनाकर वापस लौटे और निश्चित दिनचर्यानुसार चलते रहे। पर कहते हैं ना कि भावी टाले न टले।

अशरीरी अवस्था थी

मार्च, 1993 में हमारे शहर में तिरंगा फिल्म की खूब चर्चा थी। मेरे 14 वर्षीय पुत्र नन्हू की जिद के कारण वो बिना बताए उसे फिल्म दिखाने ले गये। उनके जाने के बाद मुझे इस बात का पता चला। मैं बिना भोजन किये प्रतीक्षा में लेट गयी। रात्रि 9 बजे मुझे अहसास हुआ कि कुछ गलत हो गया है। पति व पुत्र दोनों का चेहरा दिखाई दिया जैसे कि वो पीछे ही खड़े हैं। मैं उठी, चादर हटाई तो कुछ नहीं था। थोड़ी देर में ही कोलाहल मच गया कि नगर में बम विस्फोट हो गया है। उन दोनों की मृत्यु हो गई। परन्तु कमाल बाबा की, मुझे दुख की अनुभूति हो उससे पहले बाबा ने मेरी बुद्धि की डोर खींच ली। मैं बिल्कुल शान्त अवस्था में बाबा की याद में बैठ गयी। रात्रि 11 बजे सरकारी अस्पताल पहुँची जहाँ बेटा और युगल अलग-अलग भर्ती थे। पुत्र की मृत्यु सिनेमाघर में ही हो गई थी, उसी की कुर्सी के नीचे बम रखा गया था और युगल की मृत्यु रास्ते में हुई। मेरी अवस्था बाबा ने ऐसी बना दी थी कि किसी को देखने की इच्छा ही नहीं हो रही थी, न ही दुख की कोई महसूसता हो रही थी। घर में सभी रो रहे थे, मैं उन्हें शान्त कर रही थी। घर के बड़े कहें कि सुबह उठकर रोओ परन्तु मेरी अशरीरी अवस्था थी। मैं सुबह नहा-धोकर नित्य की तरह क्लास करने जाने लगी तो लोग कहने लगे, यह पागल हो गयी है। मृत्यु के बाद की क्रियाओं में मैंने अपना सारा श्रृंगार सरलता से उतार दिया। यह सब होते देख मेरे बड़े लौकिक भाई को सदमा लग गया जिनकी 6 महीने बाद मृत्यु हो गयी।

बाबा चला रहे हैं

इसके बाद भी अनेक बार परीक्षाएँ आईं किन्तु बाबा की याद से मैंने उन्हें भी पार किया। आज मैं 70 वर्ष की हो गयी हूँ, भौतिक शरीर को अनेक रोगों ने घेर रखा है फिर भी बाबा की याद के पंख लगाकर उड़ती हूँ। नित्य क्लास करती हूँ। बाबा के वो बोल मेरे लिए दवा का काम करते हैं। एक ही संकल्प कि 'बाबा चला रहे हैं, बाबा करा रहे हैं' मुझे जीने की प्रेरणा देता है और मेरे दिल में सदा ही गीत बजता है –

जीवन की नैया कर दे प्रभु के हवाले।
जैसे वो चाहे वैसे इसको संभाले।।

प्रेम की पहचान

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

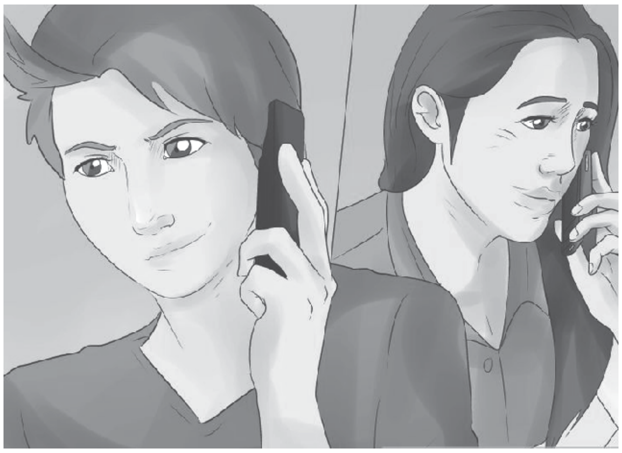

एक लड़की के मोबाइल पर फोन आता है, ''मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ, अगर फोन काट दिया तो तुमको बहुत भारी पड़ेगा।'' लड़की ने फोन नहीं काटा और वह सुनती रही, वह सुनाता रहा , '' मैं तुमको चाहता हूँ, मैं तुमको प्यार करता हूँ....।'' बाद में पता चला कि वह इस लड़की के कालेज का एक स्टूडेन्ट था, कालेज के एक फंक्शन में इस लड़की के नृत्य को देख उसको जान गया था और अब उससे बातें कर रहा था।

लेबल प्रेम का, अन्दर अधिकार भाव

उपरोक्त घटना से ऐसे लग रहा है कि वह व्यक्ति अपनी बातें सुनाने के लिए किसी पर दबाव डाल रहा है, प्रेम की तो कहीं खुशबू तक नहीं है, बातों से तो डराने-धमकाने-दबाने, रोब दिखाने, अधिकार जमाने जैसी बदबू आ रही है। नाम तो प्रेम का ले रहा है, लेबल तो प्रेम का लगा रखा है पर अन्दर भरा हुआ है अधिकार, ज़बरदस्ती, शोषण, अनाधिकार चेष्टा आदि।

कहाँ गया सभ्यता का मापदण्ड?

सवाल यह है कि यह लड़की इसकी लगती क्या है, और सभ्यता का जो मापदण्ड है कि किसी से बात करने से पहले जैसे हम पूछते हैं, क्या आपके पास समय है, क्या मैं आपसे बात कर सकता हूँ आदि शिष्टाचार की बातों के बिना सीधा आदेश देने वाला यह कौन है? यह लड़की 20 वर्षों से माता-पिता का खा रही है, उनके घर में पल रही है, उन पालने वालों, खिलाने वालों ने भी कभी इस प्रकार रोब से इससे बात नहीं की होगी तो फिर यह रोब डालने वाला इसका किस प्रकार का रिश्तेदार है? इसने इसके लिए किया क्या है?

प्रेम नहीं, हीन भावना

जिसे वह प्रेम का नाम दे रहा है, कहीं वो मन में उपजी हीन भावना तो नहीं? यदि कोई कहता है, यह उस लड़के का आकर्षण है उस लड़की में, उसके नृत्य में तो जिन्होंने उसे नृत्य करने लायक बनाया, उसमें कला भरी उनसे अपनी बात स्पष्ट करे कि मुझे इस लड़की की यह कला पसन्द है, मैं इससे प्यार करने लगा हूँ, यह आपकी अमानत है, क्या मुझे इससे प्यार करने की आप छुट्टी देंगे?

दब्बू ही दबाते हैं

लेकिन पालकों से, ज़िम्मेदार लोगों से तो बात करने की शक्ति नहीं है, इसके दो अर्थ हैं या तो वो दब्बू, डरपोक, भयभीत है जो अपनी भावना को उचित स्थान पर प्रकट नहीं कर रहा या फिर मात्र बनावटी शब्दों में बनावटी प्रेम का दिखावा कर रहा है, मात्र अपना और सामने वाले का कीमती समय बर्बाद कर रहा है। मनोविज्ञान कहता है कि जो खुद दब्बू होते हैं वे ही सामने वाले को दबाने, डराने का प्रयास करते हैं। प्रेम के नाम पर लोभ-लालच देकर या डरा-धमकाकर अपनी बात मनवाना, मूड खराब करना, प्रेम नहीं है। प्यार के लुभावने डायलॉग बोलकर उनके नीचे किसी को दबाने का उपक्रम प्रेम नहीं है। किसी को दिग्भ्रमित या चित्तभ्रमित करना प्रेम नहीं, शत्रुता है। लेकिन

आधुनिकता के नाम पर, प्रेम की ओट में आज चारों ओर इस प्रकार की विकृतियाँ फैल रही हैं।

दुर्गन्ध-युक्त प्रेम

प्रेम एक बहुत ऊँची भावना है। प्रेम एक ऐसा इत्र है जो त्याग, दया, करुणा, सन्तोष, आदर, नम्रता, सद्भावना... आदि सर्वगुणों रूपी फूलों के रस को मिलाकर प्राप्त होता है। प्रेम में सामने वाले को जो अच्छा लगे वो करने की भावना होती है, वो जितना ऊँचा है, उससे अधिक ऊपर चढ़ाने की, वह जितना प्रसिद्ध है, उससे अधिक प्रसिद्धि देने की, वह जितना सुखी, शान्त, आनन्दमय है उससे और अधिक सुखी, शान्त, आनन्दमय बनाने की भावना होती है। यह वह तरंग है जो अपनत्व का अहसास कराती है, दूसरे के आनन्द से स्वयं भी तृप्त हो जाती है। परमात्मा प्रेम के सागर हैं, हम सब उसी प्रेम को लेकर धरती पर उतरे, वो प्रेम आत्मा का गुण और आत्मा की शक्ति है। परन्तु ऊपर हमने जिस तथाकथित प्रेम का जिक्र किया उसमें तो डराने, धमकाने, अनाधिकार चेष्टा रखने जैसे दुर्गुणों की बदबू भरी है, अवश्य ही वह प्रेम का विकृत, सड़ा हुआ और बदबूदार रूप है। जब प्रेम आत्मा से होता है तो वह महक बिखेरता है पर जब शरीर से या पदार्थों से हो जाता है तो स्वच्छ प्रेम रूपी नदी में दो गन्दे नाले आ मिलते हैं, एक, मोह रूपी गन्दा नाला और दूसरा, स्वार्थ रूपी गन्दा नाला। फिर यही प्रेम दुर्गन्ध देने लगता है। इसके बड़े भयानक परिणाम सामने आ रहे हैं।

अति मोह का परिणाम

यादगार ग्रन्थ महाभारत के एक प्रसंग में इस बात का जिक्र आता है कि एक गाय अपने बछड़े को इतना चाट रही थी कि उसके शरीर से खून निकलने लगा। यह अति मोह का परिणाम है। हम अपने स्नेहभाजन को इस प्रकार खिलाते हैं, इतना खिलाते हैं कि वह बीमार पड़ जाता है, इतनी छूट देते हैं कि उद्दण्ड हो जाता है, इतना बड़ा समझने लगते हैं कि वह अपने बड़ों को रिगार्ड देना भूल जाता है, इतनी प्रशंसा करते हैं कि वह अनीति के मार्ग पर बढ़ने लगता है।

प्रेम अन्धा नहीं, इसकी रोशनी से सत्य का परिचय हो जाता है

सच्चे प्रेम की कोई हद नहीं होती, यह अचूक परिवर्तन शक्ति है, यह सकारात्मकता की चरमसीमा है, यह आत्मा की अनादि ऊर्जा है। पवित्रता प्रेम की पहचान है, पवित्रता का अर्थ है बिना किसी शर्त या चाहत के प्रेम करना। पवित्रता ही प्रेम को दैहिक कीचड़ की ओर बहने से रोकने वाली नियामक है। प्रेम एक सार्वभौमिक भाषा है जिसे हर कोई (जड़-चेतन) समझता है। प्रेम से रचनात्मकता की, कलाओं की उत्पत्ति होती है। यह अन्धा नहीं है, इसमें इतनी रोशनी है कि मानव सत्य से परिचित हो जाता है। प्रेम में भावना और विवेक का सन्तुलन है, प्रेम ही राजयोग का आधार है, इसके बल से मानवता तथा ईश्वर को वश में किया जाता है।

जहाँ राग वहाँ रोग

खलिल जिब्रान कहते हैं, दो मित्र, पति-पत्नी, भाई-भाई, भक्त-भक्त को एक दूसरे से प्रेम तो करना चाहिए परन्तु एक-दूसरे के मालिक बनने की चेष्टा न करें, नहीं तो प्रेम मर जाएगा। दूसरा, वे कहते हैं, प्रेम में बहुत निकट आने पर आक्रमण का भय हो जाता है। प्रेम के नाम पर जब आक्रमण होता है तो प्रेम भोग बन जाता है। पतंगे को भी दीप-ज्योति का आनन्द लेना है तो दूर से आनन्द ले। बहुत समीप जाने की चेष्टा में वह जलकर भस्म हो जाता है। दैहिक समीपता राग पैदा करती है। जहाँ राग है वहाँ रोग जरूर है। आज व्यक्तियों, वस्तुओं के प्रति राग के कारण सर्वत्र मानसिक-शारीरिक रोगों का विस्फोट है। शरीर मिथ्या है, जगत की वस्तुएँ भी मिथ्या हैं। आत्मा सत्य है, परमात्मा सत्य है। हमारा राग इन्हीं दो में होना चाहिए। परमात्मा शिव कहते हैं, 'जहाँ आसक्ति है वहाँ शक्ति खत्म हो जाती है।' ❖

समझदार इंसान वो नहीं होता जो ईंट का जवाब पत्थर से देता है। समझदार इंसान वो होता है जो फेंकी हुई ईंट से आशियाँ बना लेता है।

ज्ञान-प्रकाश से नर-संहार टला

ब्रह्माकुमारी उषा, साँढ़ाढ़ाला, जटहीपोरखा (छपरा-बिहार)

एक बार मैं बलिया जिले के राजापुर गाँव में एक सम्बन्धी के घर गई। वहाँ के लोग भयभीत और हलचल में नजर आ रहे थे। कारण पूछने पर पता चला कि आज से एक माह पूर्व मुस्लिम धर्म का रहीम नाम का एक व्यक्ति बाजार से गाय का माँस खरीद कर ला रहा था। रास्ते में हिन्दू धर्म के कुछ व्यक्तियों ने उसे दो-चार थप्पड़ मारे और माँस को गड्ढ़े में फेंकवा दिया। इससे मुस्लिम धर्म वाले नाराज हो गए।

कुछ दूरी पर हिन्दू धर्म के एक व्यक्ति के घर समारोह था। उसमें सूअर की बलि देने की प्रथा थी। मुस्लिम धर्म वालों ने सूअर की बलि न देने की चेतावनी दी और कहा, जब आप लोगों को गाय के माँस से घृणा है तो हमें भी सूअर के माँस से घृणा है। यह सनसनी चारों ओर फैल गई। दोनों समूहों के लोग अस्त्र-शस्त्र के साथ इकट्ठे हो रहे थे।

मुहूर्त के अनुसार बलि देने का समय आधा घंटा बाकी था। दोनों समूह प्रशासन को खबर न करने की कसम खा चुके थे। यह सुनकर, 'हिम्मते बच्चे, मददे बाप' का स्लोगन याद कर मैं आत्मा घटना-स्थल पर पहुँच गई और दोनों ओर के पढ़े-लिखे तथा समझदार दस-दस व्यक्तियों को बुलाकर कुछ दूर पेड़ की छाया में बैठने को कहा। जब वे आ गए तब मैं उनसे बोली, यह कैसी विडम्बना है कि आज का इंसान माँस, धर्म और जाति के नाम पर एक-दूसरे का घातक बन बैठा है लेकिन सत्य और असत्य को जानने के लिए हम गहराई से सोचें कि सोना एक धातु है जिससे अँगूठी, कंगन, हार, बालियाँ आदि बनाये जाते हैं। आकार-प्रकार की दृष्टि से भले ही गहनों के नाम अलग-अलग हैं लेकिन सब गहनों में हैं तो एक समान गुण क्योंकि सब एक ही धातु से बने हैं। इनमें भिन्नता पैदा करना हमारी समझदारी तो नहीं कही जाएगी। इसी प्रकार, सभी जीवधारियों के शरीर पाँच तत्वों (हवा, पानी, आग, मिट्टी, आकाश) से बने हैं। जिन तत्वों से मुनष्य के शरीर का माँस बना है, उन्हीं तत्वों से गाय, सूअर, कुत्ते, बिल्ली, हाथी, शेर, हिरण आदि का माँस बना है। रूप और आकार-प्रकार की दृष्टि से इनमें भिन्नता जरूर है लेकिन माँस तो समान ही है। फिर गाय और सूअर के माँस को लेकर आप लोग एक-दूसरे का माँस काटने को तत्पर क्यों हैं? एक-दूसरे की हत्या करके आप क्या हासिल करेंगे? दोनों समूहों को इसका जवाब देना होगा।

अलग-अलग धर्म और अलग-अलग जाति होने के कारण आपस में कटकर मर जाना, यह विवेकपूर्ण नहीं है। पहले सत्य का पता लगाएँ। धर्म या जाति भगवान या अल्लाह ने नहीं बनाये हैं। धर्म और जाति को लेकर आपसी संघर्ष करना अनुचित है। सभी धर्मों और सभी जातियों के लोगों के जन्म-मरण, हँसना-रोना, सुख-दुख की अनुभूति, उदरपूर्ति की चिन्ता एक समान है। सभी का रक्त लाल है। अगर सभी धर्मों और सभी जातियों के बीस लोगों को एक जैसी पोशाक पहनाकर एकत्रित कर दिया जाये तो क्या आप छँटनी कर देंगे कि कौन व्यक्ति, किस जाति और धर्म का है? कदापि नहीं। क्योंकि सभी की शारीरिक बनावट एक जैसी है। भगवान या प्रकृति ने जाति और धर्म की कोई मोहर नहीं लगायी है। अगर बीस पशुओं को एकत्रित कर दिया जाये तो आप लोग आसानी से गाय जाति, सूअर जाति, बकरी जाति, हाथी जाति, बिल्ली जाति, घोड़ा जाति, बन्दर जाति आदि बता सकते हैं क्योंकि इनके रूप-रंग, आकार-प्रकार में एक-दूसरे से भिन्नता है। अत: मनुष्यों की कोई अलग-अलग जातियाँ और धर्म नहीं हैं। सत्य यह है कि हम सभी इंसान हैं। सभी एक परमात्मा या अल्लाह की संतान हैं इसलिए हम सभी

आपस में भाई-भाई हैं। कहा भी गया है –

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई।
आपस में सब भाई-भाई।।

भले ही कोई व्यक्ति सड़े-गले भोजन को ताजा मानकर ग्रहण करे लेकिन वह भोजन अपना प्रभाव दिखाएगा ही, शरीर में अनेक प्रकार के रोग होंगे ही, कष्ट होगा ही और शरीर की बर्बादी होगी ही। इसी प्रकार, असत्य को सत्य मानकर भले ही हम पुरानी लकीर पर चलते हैं लेकिन असत्य अपना प्रभाव डालेगा ही। भले ही हमें अनुभव न हो लेकिन असत्य का पालन करने से हमारी बर्बादी ही होगी। भगवान ने सभी जातियों से मनुष्य जाति को उत्तम बनाया है लेकिन आज का मनुष्य पशु से भी बदतर हो गया है, जो सत्य और असत्य का ज्ञान न होने के कारण एक-दूसरे की जान लेने पर तुला हुआ है। याद रखें, अंधकार तभी भागेगा जब प्रकाश आयेगा। सारी दुनिया अंधविश्वास और अंधश्रद्धा में गोते लगा रही है। आप लोग इस पर गहराई से सोचें।

दोनों समूह अवाक् होकर सुन रहे थे। एक समूह के चार व्यक्तियों ने खड़े होकर कहा, 'देवी जी, आप धन्य हैं। आपकी अमूल्य वाणी ने हमारी बुद्धि का ताला खोल दिया। हम लोगों का सारा अंधकार भाग गया। आज कितनी औरतों का सुहाग चला जाता। कितने बच्चे और बच्चियाँ बिना बाप के होकर रोते-बिलखते असहाय हो जाते। हम लोग जीवन में ऐसा काम कभी भी नहीं करने का वादा करते हैं।' फिर दूसरे समूह के छः व्यक्ति खड़े होकर बोले, 'सचमुच आप दुर्गा का अवतार हैं। सभी प्राणियों के ऊपर आपका दया-भाव देखकर हम लोग अत्यन्त खुश हैं। इतने दर्दनाक दृश्य से आपने बचा लिया। हम लोगों की बुद्धि उल्टी से सीधी हो गई। आँखों का पर्दा हट गया।' मैंने उन सभी का धन्यवाद किया और अपने-अपने समूह में मिल जाने को भेज दिया। फिर सभी व्यक्ति अपने-अपने घर की ओर प्रस्थान कर गए।

सचमुच हर मानव में मानवता का गुण अवश्य है लेकिन बाहरी धूल की परत पड़ने से मानवता अदृश्य हो जाती है, दानवता आ जाती है। अगर उस परत को हटा दिया जाये तो पुनः मानवता जागृत हो जायेगी अर्थात् मानव में परिवर्तन हो जायेगा लेकिन इसके लिए दिव्य बुद्धि की आवश्यकता है।

बाबा ने क्या-क्या मुझसे कहलवा कर इतने बड़े हादसे को रोक दिया। मैं आश्चर्यचकित हो गई। सचमुच नारियों में बहुत बड़ी शक्ति छिपी हुई है। अगर नारी इसे जागृत कर दे तो अजेय हो जाएगी, केवल हिम्मत और बाबा में दृढ़ निश्चय की जरूरत है। ❖

बाबा ने बिलकुल ही बदल डाला है

ब्रह्माकुमारी कुसुम, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली

सन् 2002 से मैंने ईश्वरीय ज्ञान में चलना शुरू किया, तब मैं प्राचार्या के पद पर कार्य कर रही थी। बड़ी ही सख्ती व अनुशासन से चलने वाली मैं हर समय चेहरे पर गुस्सा रखती थी। मेरा मानना था कि 'हँसी तो फँसी' इसलिए सख्त रहना जरूरी लगता था। ईश्वरीय ज्ञान मिलने पर निमित्त बहनों ने कहा, गुस्सा नहीं करना चाहिए। मैं बार-बार बहनों को कहती थी, गुस्से के बिना तो स्कूल चल ही नहीं सकता; मैं उन्हें स्कूल की सभी समस्याएँ बताती। वे मुझे समझाती कि बाबा को अपने साथ रखो, बाबा सब कठिनाइयों को दूर कर देंगे, स्कूल के सभी कार्य सफलतापूर्वक करवाएँगे। धीरे-धीरे मुझे भी इस बात का अनुभव होने लगा कि बाबा साथ रहकर हर क्षेत्र में बहुत-बहुत मदद कर रहे हैं। गुस्सा जैसे गायब ही हो गया। अब तो हर कार्य करने से पहले याद करते ही बाबा हाजिर हो जाते हैं। हर कार्य प्यार से करवा देते हैं। अब मैं समझ चुकी हूँ कि पहले मैं कितनी गलत थी। बाबा के साथ से मेरी, मेरे स्कूल की, सहयोगी स्टाफ की, अनुशासित बच्चों की हर ओर प्रशंसा बढ़ने लगी। अब मुझे पूरा निश्चय है कि बाबा के साथ से हमेशा सफलता मिलेगी ही मिलेगी।

रंगमंच

डॉ. प्रेम चन्द सैनी, डेराबस्सी (पंजाब)

रंगमंच एक ऐसे स्थान का नाम है जहाँ पहुँच कर हर कलाकार का अपना अस्तित्व बदल जाता है। इस स्थान पर आते ही वह पहले वाला रहन-सहन, खान-पान, उठना-बैठना, बोलना-चलना आदि रंगमंच की इच्छा अनुसार बदल लेता है। चाहे कैसा भी अभिनेता हो, वह अपनी मर्जी अनुसार एक शब्द भी नहीं बोल सकता। उसका सभी प्रकार का सम्बन्ध स्टेज़ पर काम करने वाले कलाकारों से, निर्देशक से या फिर देखने वाले दर्शकों से हो जाता है। वह सभी कुछ कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, कौन मेरे माता-पिता तथा कौन-सा मेरा परिवार है, भूल जाता है। उसे केवल अपना अभिनय, स्टेज तथा सामने बैठे दर्शक ही याद रहते हैं।

स्टेज पर अभिनय करते समय अगर वह अपने माता-पिता, भाई-बहन तथा रिश्तेदारों से मिलना चाहे और अपने घर को देखना चाहे तो वह उस रूप में, जिसमें अभिनय कर रहा है, नहीं देख सकता। उन सभी से मिलने के लिये उसे अपने स्टेज वाले वस्त्र उतार वैसा ही बनना पड़ेगा जैसा घर से आया था। फिर स्टेज को भी छोड़ना पड़ेगा तथा घर में आकर परिवार से मिलना पड़ेगा।

विकारों को ही स्वधर्म बनाने की भूल

शिवपिता परमात्मा भी यही कहते हैं कि बच्चे, ''यह सृष्टि एक स्टेज है और तुम आत्मायें इस स्टेज पर अभिनय करते हो। मैं इस ड्रामा का डायरेक्टर हूँ। जब तुम आत्मायें परमधाम से इस सृष्टि रंगमंच पर आती हो तो अभिनय के अनुसार तन रूपी वस्त्र पहनने पड़ते हैं।'' हम आत्माएँ तन रूपी वस्त्र धारण कर किसी का बेटा, भाई, माता, पत्नी, पति आदि या हिन्दू, सिख, मुसलमान, ईसाई, साहूकार, गरीब, डाक्टर, वकील आदि पार्ट बजाते हुए इतनी मस्त हो जाती हैं कि अपने असली मां-बाप को, अपने आप को और अपने घर को भी भूल जाती हैं। हम अपना स्वधर्म भूलकर विकारों के वश होकर दुखी और अशान्त हो जाती हैं। जिन विकारों का हमने अभिनय किया था, उन्हीं को अपना स्वधर्म बना लिया। हमें यह ख्याल भी नहीं आया कि ये विकार तो हमारे दुश्मन हैं। हमारा स्वधर्म तो शान्ति है। विकारों के वश होकर हम इतने दुखी और अशान्त हो गये कि पिता परमात्मा को पुकारने लगे। पिता परमात्मा तो अपने घर परमधाम में हैं और हम ढूंढ़ रहे हैं इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर, कैसे मिलेगा? मन्दिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों, गिरजाघरों, नदियों, पेड़ों, पहाड़ों तथा कब्रों आदि में अनेकों नामों से उसे पुकारने लगे।

भूल गए भगवान का नाम

हम तो परमात्मा का असली नाम भी भूल गये। आप सोचिये कि आपका नाम तो हो सत्यपाल और कोई आपको कृष्णलाल, कोई रामलाल, कोई शामलाल या राज के नाम से पुकारे तो क्या आप किसी की पुकार का उत्तर देंगे? क्योंकि जब आप का नाम किसी ने लिया ही नहीं तो आप उत्तर क्यों देंगे? इसी प्रकार आज भगवान के भी अनेकों नाम रख दिये हैं तथा उसके रहने के भी अनेकों स्थान बना दिये हैं। कोई कहता, पेड़ों में, पहाड़ों में, नदियों में, कीड़ों में, यहाँ तक कह दिया कि कण-कण में है। वाह रे इन्सान कमाल है तेरी, खुद कोठियों में, बंगलों में, महलों में रहे और भगवान ईंटों, पत्थरों, कण-कण में रहे! वह हमारा बाप है, कितना अज्ञान है अपने पिता के बारे में! जब हमें उनका नाम ही पता नहीं, धाम भी पता नहीं तो वे मिल भी कैसे सकते हैं। वे हमारे पिता हैं अत: वे फिर भी हम पर तरस करते हैं और स्वयं आकर अपने नाम, अपने काम

तथा अपने धाम का परिचय देते हैं। वे इस समय प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतारित होकर, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से परिचय दे रहे हैं।

परमात्मा कहते हैं, मेरा नाम शिव है, मेरा स्वरूप ज्योतिबिन्दु है, मैं परमधाम का रहने वाला हूं, तुम सब आत्मायें भी ज्योतिबिन्दु स्वरूप मुझ अपने पिता परमात्मा के साथ परमधाम में ही रहती थी। तुम आत्मायें सृष्टि रूपी नाटक में पार्ट बजाते हुए अपने घर और मुझ पिता परमात्मा को भूल गई हो। अब यह नाटक पूरा होता है और मैं स्वयं तुम बच्चों को वापिस घर ले जाने आया हूँ। तुम मुझ अपने पिता को केवल याद करो तो पावन बन सतयुग के मालिक बन जायेंगे और वहाँ लक्ष्मी-नारायण के नाम से राज्य करेंगे।

प्रिय बहनो और भाइयो, परमपिता परमात्मा की आज्ञा अनुसार अब स्वयं को आत्मा समझ परमात्मा को याद करो क्योंकि सृष्टि का महापरिवर्तन सिर पर खड़ा है अतः समय व्यर्थ ना गंवाकर किसी नज़दीकी ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र से संपर्क स्थापित करें। अब विश्व का परिवर्तन, विश्व के मालिक द्वारा होकर ही रहेगा। समय आ चुका है, हालात सामने हैं। अचानक कभी भी कुछ भी हो सकता है, अभी नहीं तो फिर कभी नहीं। ❖

व्यसनों से मुक्ति की युक्ति

ब्रह्माकुमारी रीतू, कुरूक्षेत्र

आज बहुत सारी माताएँ-बहनें अपने पतियों-भाइयों के व्यसनों जैसेकि शराब का सेवन, माँसाहार, सिगरेट पीना, तम्बाकू खाना आदि से दुखी रहती हैं और घर के सभी सदस्यों की यही इच्छा रहती है कि इनको कैसे व्यसनों से मुक्त कराया जाये।

मैं भी अपने युगल की व्यसनों की आदतों से बहुत परेशान रहती थी। रोको तो लड़ाई हो जाती थी और घर का वातावरण बहुत खराब हो जाता था। तभी मैंने पीस ऑफ माइंड चैनल पर प्रसारित 'समाधान' कार्यक्रम देखा जिसमें ब्रह्माकुमार सूरज भाई जी द्वारा बताये गये योग के प्रयोग मैंने किए और 6 महीने में ही मेरे युगल सारे व्यसनों से सदा के लिए मुक्त हो गए। मेरे युगल को व्यसनों की आदत कई वर्षों से थी।

परमात्मा डॉक्टर

सबसे पहले हम भगवान के यथार्थ स्वरूप को पहचानें कि भगवान कौन हैं क्योंकि व्यसनों से मुक्ति सिर्फ और सिर्फ परमात्मा रूपी डॉक्टर की शक्तियों से ही हो सकती है। इसके लिए हमें डॉक्टर रूपी भगवान को सबसे पहले जानना पड़ेगा।

जब हम परमात्मा रूपी डॉक्टर को जान जाते हैं तब उनसे मन की सारी बात कर सकते हैं, अपनी बीमारी बता सकते हैं। इसके लिए हम नजदीक के ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर जाकर प्रतिदिन एक घंटे के लिए सात दिन का राजयोग का कोर्स करें। इसमें हमें स्वयं का और परमात्मा का सत्य परिचय मिलेगा।

परमात्मा से रिश्ता

जब हम भगवान के वास्तविक स्वरूप को जान जाएंगे तब उनसे कोई रिश्ता जोड़ पाएँगे जैसेकि माता-पिता, भाई-बहन इत्यादि। फिर जब भी समय मिले भगवान जी को उसी रिश्ते से प्रतिदिन पत्र लिखें।

प्रतिदिन सुबह, दोपहर एवं शाम जो भी भोजन बनाएँ, सबसे पहले उसे भगवान जी को भोग लगाएँ। अब यह सिर्फ भोजन नहीं बल्कि परमात्म प्रसाद बन चुका है। यह संकल्प लें कि इस भोजन में परमात्मा की सारी शक्ति भर चुकी है और इसे खाकर मेरा पति/भाई सदा के लिए व्यसनों से मुक्त हो रहा है। फल/दूध/पानी को भी भगवान को भोग लगाकर ही घर में सबको दें और स्वयं भी स्वीकार करें। विस्तृत जानकारी के लिए आप नजदीकी ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र से सम्पर्क कर सकते हैं। ❖

खुदा का आशियाना - शक्तिनिकेतन

दत्तात्रय भोये, जव्हार, महाराष्ट्र

आज इस भौतिकतावादी युग में कम्प्यूटर में इन्टरनेट पर चैटिंग करना, मोबाइल में व्हाट्स अप पर नये-नये मैसेज शेयर करना, टी.वी में सीरियल, सिनेमा देखना, फैशन करना, फ्रेंडस् सर्कल बनाना, ये सब युवाओं की जरूरत बन गई है। अगर ये बातें आज की युवा पीढ़ी में न हों तो उनको पिछड़ा हुआ माना जाता है। लेकिन इन सब बातों से परे न्यारी और प्यारी-सी दुनिया हमने देखी है। आप सोच रहे होंगे कि कहाँ और कौन-सी है वह दुनिया? तो हम नाज से कहेंगे, वह है इंदौर में स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा संचालित शक्तिनिकेतन। इस अद्वितीय छात्रावास की स्थापना परम श्रद्धेय भ्राता ओमप्रकाश जी ने की। पूरे भारतवर्ष एवं नेपाल से आई हुई कन्यायें यहाँ पर लौकिक पढ़ाई के साथ-साथ अलौकिक पढ़ाई पढ़ रही हैं। भिन्न-भिन्न परिवारों से आई हुई कन्यायें, कैसे भी कड़े संस्कार वाली क्यों न हों लेकिन छात्रावास के अलौकिक एवं प्रेरणादायी वातावरण तथा निमित्त बहनों की कड़ी निगरानी वाली ममतामयी पालना से इन में अद्‌भुत परिवर्तन आ ही जाता है। यहाँ से परिपूर्ण पालना लेकर निकली हुई कन्यायें देश-विदेश में बाबा की सेवाओं में विशेष मददगार बनी हुई हैं।

बी.कॉम फाइनल ईयर में पढ़ने वाली

एक कुमारी का कहना है, मैं इंजीनियरिंग कर रही थी। दो साल बाद शक्ति निकेतन आने का संयोग बना। अपने मित्रों के साथ घूमना-फिरना, मौज-मस्ती करना, पूरा समय फोन पर बातें करना, ये मेरे लिये आम बात थी। व्यवसाय और ट्यूशन के द्वारा जो पैसे मिलते थे वो सौगातें खरीदने में तथा मस्ती में खर्च हो जाते थे। मैं दुनिया के दलदल में फँसती चली जा रही थी मगर बाबा ने अपने घर इस शक्तिनिकेतन में बुला लिया। रात को देर से सोने और सुबह देर से उठने की आदत थी मगर होस्टल में मैं अमृतवेले उठने लगी। मेरे विचार, उठने-बैठने, रहन-सहन, व्यवहार, लेन-देन, चरित्र, धारणाओं में दिन प्रतिदिन परिवर्तन होने लगा। जहाँ मेरे हाथ में 24 घंटे फोन रहता था, गाड़ी होती थी, मैं मित्रों से घिरी रहती थी, इंटरनेट पर समय लगाती थी, इस पवित्र वायुमण्डल में आकर ये सब दुनियावी बातें छोड़ने में एक पल भी देरी नहीं लगी। बाबा ने इतनी प्राप्तियाँ कराईं जिनके लिए बाबा का कुछ शब्दों में शुक्रिया अदा करना सम्भव नहीं। मेरे स्वभाव-संस्कार दूसरों को परेशान करने वाले थे मगर दिलाराम ने अपने दिल में जगह देकर मुझे शांत-शीतल कर दिया। मेरे अंदर कोई विशेषता नहीं थी परन्तु बाबा ने मुझे अनेक विशेषताओं से भरपूर कर दिया। मुझे मायावी दुनिया के चंगुल से छुड़ाकर अपनी गोद में समा लिया। होस्टल की निमित्त बहनों

की परवरिश और समझाइश ने मेरे कड़े संस्कारों को पिघलाने में पूरी मदद की। अब मैं यही कहना चाहूँगी,

दुनिया की हर बाज़ी जीतकर मशहूर हो गये,
इतना मुस्कराए कि आँसू दूर हो गये,
हम काँच के थे तो दुनिया ने हमें फेंक दिया,
भगवान के बने तो कोहिनूर हो गये।।

शक्ति निकेतन की कुछ विशेषतायें इस प्रकार हैं -

ईश्वरीय नियम और मर्यादाओं की पालना- यहाँ की दिनचर्या की शुरूआत होती है प्रातः चार बजे से। हर एक छोटी या बड़ी कन्या सभी को अमृतवेले योग करना, नियमित मुरली क्लास सुनना अनिवार्य है। इसमें कोई आनाकानी कर ही नहीं सकता। समय-समय पर ज्ञान एवं योग के पेपर भी लिये जाते हैं ताकि इन कन्याओं का इन विषयों पर सदा अटेंशन रहे और रुचि भी बढ़ती रहे। यहाँ की समर्पित बहनों द्वारा कन्याओं को सादगीपूर्ण , मर्यादायुक्त, दिव्यगुणयुक्त बनाने हेतु न सिर्फ मार्गदर्शित किया जाता है परंतु वे खुद इन कन्याओं के लिये अच्छा खासा उदाहरणमूर्त बन कर रह रही हैं। उनका त्याग-तपस्या वाला जीवन ही कन्याओं का भी जीवन बना रहा है। दिन-रात वे कन्याओं की सेवा में तत्परता से लगी हुई हैं।

खान-पान की शुद्धि- छात्रावास में बाजार में बनी कोई भी चीज़ खाने की सख्त मनाही है। यहाँ सभी प्रकार के खाद्य पदार्थ व मिठाइयाँ बनती हैं और इन कन्याओं की इस कदर पालना होती है जो इनका ध्यान बाहरी चीजों पर जाता ही नहीं है।

स्वच्छता एवं स्वावलंबन- यहाँ पर हर एक कन्या को खुद का काम खुद करना सिखाया जाता है। कपड़े धुलाई करना, बर्तन सफाई, झाड़ू लगाना, पोंछा लगाना, सब्जी काटना ऐसे कार्य कन्यायें प्रेम से करती हैं।

विविध कलाओं में पारंगत- स्थूल कार्य के साथ-साथ हर कन्या को गायन कला, भाषण कला, पाककला, चित्रकला, नृत्यकला, लेखन कला, अभिनय, मेहमान-नवाजी, साज-सज्जा, कढ़ाई-बुनाई आदि बातों की शिक्षा दी जाती है। हर साल होने वाले वार्षिकोत्सव में इनके द्वारा किये गये कार्यक्रम देखकर सभी दंग रह जाते हैं। छात्रालय की सजी-सजाई दीवारें, छतें, खंभे इन सबमें इनकी कला का अच्छा प्रदर्शन देखने को मिलता है।

आपसी स्नेह एवं एकतापूर्ण व्यवहार- यहाँ की कन्यायें भिन्न-भिन्न प्रांतों, संस्कारों, माहौल से आई हुई होती हैं। फिर भी इनमें आपस में जो स्नेह है, एकता है, एक दूसरे के प्रति व बड़ों के प्रति, यज्ञ के प्रति जो रिगार्ड है वो सचमुच देखते बनता है। दीदियों द्वारा इतना रूहानी प्यार इन बच्चियों को मिलता है कि इनको अपने लौकिक घर और माता-पिता की याद तक भूल जाती है।

बात नौ साल पहले की है। हम अपनी लौकिक कन्या की हठ, जिद्द, बड़ों की अवमानना – ऐसी आदतों से परेशान थे। इस कलिकाल के प्रभाव से, बाहरी वातावरण से उसको कैसे दूर रखें, इसके लिए भी ज्यादा चिंतित थे। ऐसे में हमारी सेंटर की बहन के कहने पर हमने अपनी कन्या को इंदौर होस्टल में रखा। आज हमारी कन्या का जीवन तो बन ही गया लेकिन हमने जो इस शक्तिनिकेतन की पालना पाई, स्नेह पाया, निश्चित-स्वतंत्र जीवन पाया....... मानो हमारा भी जीवन बन गया। इसलिये दिल बार-बार यही गीत गाता है,

शुकराने गाये दिल घड़ी-घड़ी आपका,
आपने दिया हमें प्यार दो जहां का।

होस्टल में प्रवेश की प्रक्रिया जनवरी माह से शुरू होती है। अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें-

बी.के करुणा
शक्तिनिकेतन
ओम्शांति भवन, ज्ञान शिखर, गेट नं - 2
33/4 न्यू प्लासिया, इंदौर (म.प्र.) - 452001
मो.- 09425316843, 09425903328
फोन नं. - 07312531631

नारी सम्मान
एक विवेचन

ब्रह्माकुमार विपिन गुप्ता, टीकमगढ़ (मध्यप्रदेश)

वर्तमान समय में नैतिक और मानवीय मूल्यों की अति गिरावट के कारण भारत में अधिकतर नारियों का सम्मान और सुरक्षा एकदम निचले स्तर के हैं और समाज में उनका दर्जा बिल्कुल तुच्छ है। उन्हें आए दिन शोषण और दुष्कृत्यों का शिकार होना पड़ रहा है।

सवाल यह है कि क्या यह भारत की सभ्यता की सर्वकालिक तस्वीर है अथवा ये दाग कुछ समय से ही उभर कर सामने आए हैं। भारतीय संस्कृति नारी सम्मान की कौन-सी गौरव गाथा गाती है, आइए इस से रूबरू होते हैं।

वैश्विक स्तर पर नारी को समानता का दर्जा दिए जाने की मांग उठाई जाती है पर भारतीय सभ्यता दर्शाती है कि यह समानता नहीं हो सकती क्योंकि नारी का दर्जा हमेशा ही पुरुषों से ऊँचा है और यह बात हर कसौटी पर साबित होती है।

सामान्य नारी भी रखती है महापुरुष के समान दर्जा

भारत एकमात्र वह देश है जिसे भारत माता कह कर संबोधित किया गया है व इसकी संस्कृति वंदे मातरम् के गुंजन से सुशोभित हुई है। यहाँ नारी शक्ति की दैवीय एवं मातृ-सत्ता के रूप में आराधना होती है। देवियों के नाम भी नारी चरित्र की उत्कृष्टता को प्रकट करते हैं जैसेकि दुर्गा (दुर्गुणों को मिटाने वाली), वैष्णो (विषय-विकारों को समाप्त करने वाली), लक्ष्मी (श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त) सरस्वती (ज्ञान स्वर उच्चारने वाली), जगदम्बा (विश्व को मातृवत् स्नेह देने वाली), शीतला (मन को सच्ची शान्ति देने वाली), ज्ञान गंगा (मानसिक अस्वच्छता को धोने वाली), महाकाली (बुराई व अनैतिकता को विकराल रूप से जीतने वाली), मनसा (मनोकामनाएँ पूर्ण करने वाली) एवं संतोषी, गायत्री, ज्वाला, अन्नपूर्णा, भवानी इत्यादि सारे नाम नारी की महान आध्यात्मिक शक्ति के सूचक हैं। वर्ष में दो-दो बार नौ दिनों के लिए उनकी आराधना के पर्व नवरात्रि मनाए जाते हैं। उनकी आध्यात्मिक उच्चता के सूचक उनके यादगार मंदिर भी ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों पर स्थित हैं जहाँ कुछ क्षण के दर्शन मात्र के लिए दर्शनार्थियों की लम्बी-लम्बी कतारें लगी रहती हैं। इतनी श्रद्धा व मान जो देवियों के प्रति भारत में है वह देवताओं के प्रति नहीं है। सनातन काल से देवियों का नाम देवताओं से पहले लिया गया है जैसे श्री लक्ष्मी-नारायण, श्री सीता-राम, श्री राधा-कृष्ण इत्यादि। यहाँ तक कि यहाँ की नदियों को भी माता कह कर गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी, गोदावरी, नर्मदा इत्यादि देवी सूचक नामों से ही संबोधित किया गया। उच्चारण तक में नर शब्द से नारी शब्द (मात्राओं में) भारी है। माँ को प्रथम गुरु भारत में कहा गया है। पुरुष को महान बनने के लिए नारी के गुणों (क्षमा, सेवा, प्रेम, उदारता) को ही अपनाना होता है क्योंकि ये गुण नारी में स्वाभाविक रूप से ज्यादा होते हैं। अत: एक सामान्य नारी भी एक महापुरुष के बराबर का दर्जा वैसे भी रखती है।

विगत 20-25 वर्षों से शिक्षा क्षेत्र में तीव्र विस्तार हुआ है। ज्यादातर परीक्षा परिणामों में बहनों के नाम ऊँचाई पर रहते हैं। बड़े-बड़े पदों पर वे आसीन हो रही हैं। शिक्षक या

अनुशासित कर्मचारी के रूप में उन्हें बेहतर माना जा रहा है। सीमा सुरक्षा में भी उन्होंने अपनी उपस्थिति दर्ज कर दी है। ये सारे आंकड़े यह प्रत्यक्ष करने के लिए काफी हैं कि नारी शारीरिक शक्ति को छोड़ कर हर क्षेत्र में पुरुषों से बेहतर सिद्ध हो रही है। शारीरिक शक्ति तो वैसे भी मानवीय योग्यता व अच्छाई का कोई विशेष मापदण्ड नहीं है क्योंकि वह तो पशुओं में भी मानव से कहीं ज्यादा होती है पर मनुष्य तो बुद्धि व ज्ञान से ऊँचा है न!!

प्रश्न उठता है कि वर्तमान में जो विकृतियाँ उभरी हैं वे कहाँ से आई और जो महान आदर्श व आस्था के दर्शन हमें मिलते रहे वे बेअसर कैसे हो गए। गहराई से विचार करने पर दो कारण सामने आते हैं –

1. अपनी संस्कृति में निहित मूल्यों की यथार्थ पहचान की कमी।
2. मूल्यों के अभाव में आधुनिकता की विवेकहीन व्याख्या, उसके आधार पर बिना सोचे-समझे अंधानुकरण करना।

सन्तुलित मार्ग

उदाहरण के रूप में हर सदी में भाषा, भोजन और पहनावे में निश्चित तौर पर अंतर आता ही है, इसे कोई रोक नहीं सकता। एक ही भाषा, भोजन व पहनावा सर्वकालिक नहीं हो सकते लेकिन भाषा में सभ्यता व मिठास, भोजन में सात्विकता एवं स्वास्थ्य तथा पहनावे में शालीनता एवं सुविधा सर्वकालिक मूल्य हैं। इन मूल्यों को बरकरार रखते हुए हम पुरानी संस्कृति को वर्तमान आवश्यकतानुसार रूप दे सकते हैं। यही वास्तविक आधुनिकीकरण है। यह ज्यों की त्यों बनी परिपाटी पर हठपूर्वक चलने की रूढ़िवादिता तथा पुरानी परंपराओं में निहित आदर्शों को भुलाकर अंधी आधुनिकता की उन्मत्तता के बीच का संतुलित मार्ग है।

स्वच्छन्दता है जंगलराज

दूसरे बिंदु पर यह स्थिति दिखाई देती है कि पुरानी परंपराओं के अंधश्रद्धा पूर्ण निर्वाह से जो समस्याएँ पैदा हुईं उनके कारण बहुत हद तक लोगों का पुरानी परम्पराओं से विश्वास उठता गया और उनका स्थान आज की भोगवादी झूठी आधुनिकता ने ले लिया। इस आधुनिकता में स्वतंत्रता और स्वच्छंदता के बीच का फर्क ही मिट गया। वास्तविक स्वतन्त्रता की चाहना में मूल्यविहीन जीवनशैली की होड़ को आधुनिकता व स्वतंत्रता का अंग समझना शुरू कर दिया गया। सिनेमा (जिसका संचालन मूलत: पुरुष वर्ग के हाथों में है) द्वारा नारी को दैहिक वस्तु (न कि व्यक्ति) की तरह प्रस्तुत किया जाता है जिस पर बिंदास, बोल्ड और ग्लैमरस जैसे भ्रामक शब्दों के लेबल लगा दिए जाते हैं। धीरे-धीरे महिलाओं ने दैहिक वस्तु की तरह प्रस्तुत की गई इस छवि को अपना सुंदर व्यक्तित्व समझने का भ्रम पाल लिया। इसके पीछे अपनी अल्पज्ञता और पुरुष वर्ग की तुच्छ मानसिकता को समझ पाने में वह नाकाम रही। सवाल उठने लगे कि यदि पुरुष बीच रास्तों पर धूम्रपान कर सकते हैं, शराब पीकर चल सकते हैं, झगड़े व गाली-गलौच कर सकते हैं तो फिर हमारे मनमर्जी से जीने के ढंग व पहनावे पर प्रश्न क्यों? इन उत्तरहीन तर्कों में वह यह नहीं समझ पा रही है कि यह स्वतंत्रता की नहीं बल्कि स्वच्छंदता व मनमानी उन्मत्तता की परिभाषा है, जो स्त्री हो या पुरुष दोनों को ही पतन की ओर ले जाती है। नैतिक समानता व उन्नति के समान अधिकारों में तो नियमों की बात हो सकती है पर स्वच्छंदता में समानता? इसमें तो मनमानी ही नियम है। स्वच्छंदता तो जंगलराज है जिसमें जिसकी लाठी उसकी भैंस का नियम चलता है। यह स्त्री व पुरुष की नहीं बल्कि मानवता की विकृति है जो दोनों को मर्यादा और कर्त्तव्यों से गिरा देती है।

स्वच्छन्दता की जिम्मेवारी स्वयं पर

उपरोक्त वर्णन का उद्देश्य यह है कि नारी अब आत्मबल व विवेक की धनी बने। वह उत्थान के लिए सरकार, समाज व पुरुषों पर निर्भर न रहे बल्कि मूल्यों व प्रतिभाओं को आधार बना कर आत्मनिर्भर हो। स्वच्छंदता कोई मूल्य नहीं, न ही यह स्त्री या पुरुष किसी का भी

अधिकार है। उन्नति और सफलता के समान अवसर नर-नारी दोनों के अधिकार हैं। नारी अपनी शक्ति को जाने। स्वच्छंदता का कोई जिम्मेवार नहीं होता, इसकी जिम्मेवारी सभी की स्वयं की होती है।

तो बहनें आधुनिकता के भ्रामक संदेशों व प्रेरणाओं से दूर हो जाएँ। वे कोई वस्तु नहीं जो अपनी छवि उस प्रकार की समझ कर वैसा व्यक्तित्व बनाने का प्रयास करें बल्कि अपने को प्रतिभायुक्त, गुणयुक्त शक्ति समझें। फिर पुरुषप्रधान समाज में शक्ति नहीं जो उन्हें बढ़ने व सफल होने से रोक ले और इस कार्य में बहनें, बहनों की, नारी, नारी की सहयोगी-साथी बने जिससे यह पुरानी मान्यता कि नारी ही नारी की दुश्मन होती है व ईर्ष्या रखती है, समाप्त हो जाए। ❖

संजय की कलम से..पृष्ठ 4 का शेष

अंकित किया, उनके हाथ में त्रिशूल देकर उन्हें त्रिताप-हारी (हर-हर) प्रकट किया और सिर पर गंगा चित्रित करके उन्हें 'गंगाधर' व्यक्त किया। फिर शिवलिंग को इसी शंकर का प्रतीक मान लिया गया परन्तु दोनों के नाम, रूप और कर्त्तव्य भिन्न हैं। शिव सर्वोच्च हैं और शंकर उनकी रचना।

शिवरात्रि वास्तव में परमपिता परमात्मा शिव ही के दिव्य अवतरण की स्मृति दिलाने वाला शुभ महोत्सव है। त्रिदेव के भी रचयिता, विश्व के परमपिता के दिव्य अवतरण का उत्सव होने के कारण यह सर्वश्रेष्ठ है। 'रात्रि' शब्द धर्मग्लानि और अज्ञानान्धकार का सूचक है। जब सभी आत्म-विस्मृति रूपी निद्रा में सोये होते हैं, सभी की बुद्धि तमोगुण से अच्छादित होती है और विकार रूपी लुटेरे मनुष्य के सुख को लूट कर उसे नष्ट-भ्रष्ट कर रहे होते हैं, तब ऐसी रात्रि में परमपिता परमात्मा शिव जगत् के कल्याण के लिए अवतरित होते हैं। ऐसा समय कलियुग के अन्त का ही होता है। कलियुग के अंत में अवतरित होकर परमपिता परमात्मा शिव ज्ञान रूपी अमृत और योग रूपी प्रकाश द्वारा मनुष्य मात्र को सतोप्रधान एवं स्वरूप-स्थित बनाते हैं जिससे सतयुग की शुरूआत होती है। पुराणों में भी लिखा है कि नई सृष्टि की स्थापना के लिए ज्योतिर्लिंगम शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और उसके सम्मुख प्रगट हुए। उसी वृत्तांत की याद में हर वर्ष शिवरात्रि का त्योहार मनाया जाता है। अतः याद रहे कि परमात्मा शिव का अवतरण-काल कलियुग के अंत और सतयुग के आरंभ का संगमकाल है जोकि अभी चल रहा है। आइये, इस शुभ समय में स्वयं की वास्तविकता को जानें, शिव को जानें, पहचानें और उनसे वरदान प्राप्त कर लें। ❖

तू ही शिव निराकार

ब्रह्माकुमार मदन मोहन, ओआरसी, गुरुग्राम

तेरे हैं सब, तुझसे हैं, बस हर पल तेरे इशारे।
तेरे प्यार की खुशबू से नित महकें नए नज़ारे।।

तेरी इनायत है सब पर, तू सबसे निराला।
तेरे नूर से चमके ये जग, तू सबका रखवाला।।
कोई न देखे तुझको लेकिन तू सबको निहारे।
तेरे हैं सब, तुझसे हैं, बस हर पल तेरे इशारे।।

तू मनमीत सभी का प्यारा, सच्चा एक सहारा।
सुख सच्चा तेरी याद में, हर दिल ने तुझे पुकारा।।
तू साँसों में, विश्वासों में, तू ही सबको तारे।
तेरे हैं सब, तुझसे हैं, बस हर पल तेरे इशारे।।

तू है एक समन्दर गहरा, गुण-मोती तुझमें पायें।
जितने गहरे डूबें तुझमें, उतने रंगते जाएँ।।
मन-वीणा के तार सदा तेरे ही स्वर गुँजारें।
तेरे हैं सब, तुझसे हैं, बस हर पल तेरे इशारे।।

परम शिखर पावनता का, तू सबका शृंगार।
हे ज्योतिबिन्दु, ज्ञानसिन्धु, तू ही शिव निराकार।।
तेरी महिमा के शब्दों से गुँजित चाँद-सितारे।
तेरे हैं सब, तुझसे हैं, बस हर पल तेरे इशारे।।

आओ अब 'कुमार-कुमारी बचाओ' अभियान का आरम्भ करें

ब्रह्माकुमार देवेन्द्रनारायण पटेल, मुलुंड (मुंबई)

आजकल भारत सरकार बेटी बचाओ अभियान चला रही है। ज्ञान मार्ग में 'कुमार-कुमारी बचाओ' अभियान चलाने की जरूरत है। द्वापरयुग से देवतायें जब वाममार्ग में चले गए तब साधु-संन्यासियों ने ब्रह्मचर्य (पवित्रता) में रहकर इस दुनिया को थमा कर रखा था वरना यह दुनिया तो कब की जलकर खाक हो चुकी होती। लेकिन आज प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में नियमित पढ़ने वाले हजारों कुमार-कुमारियों ने आजीवन मनसा-वाचा-कर्मणा पवित्र रहकर दुनिया को थमाया हुआ है वरना तो यह कब की डूबकर, जलकर खाक हुई होती।

पवित्रता ही सुख-शान्ति की जननी है

आज इस विश्व में कुमार-कमारियों को बचाने की जरूरत है। वे बचेंगे तो पवित्रता बचेगी। पवित्रता बचेगी तो दुनिया में सुख-शान्ति बचेगी क्योंकि पवित्रता ही सुख-शान्ति की एकमात्र जननी है। कुमार-कुमारियों को भी स्वयं को बचाना है क्योंकि जो बचेगा वही दूसरों को बचा सकेगा। आजकल कम्प्यूटर तथा मोबाइल फोन्स पर लोग सोशल एप्स अधिक इस्तेमाल करते हैं (जैसे फेसबुक, व्हाट्स-एप, ट्विटर, लिंक्ड-इन, इन्स्टाग्राम, माई-स्पेस, वुई-चैट, स्नैप-चैट इत्यादि)। इनका इस्तेमाल करते हुए स्वयं को बचाकर रखना अत्यंत जरूरी है, नहीं तो कभी भी पाँव तले जमीन खिसक सकती है। कुमार-कुमारियों को बहुत सावधानीपूर्वक इनका इस्तेमाल करना चाहिए। जरूरी हो, सेवार्थ हो, तो ही। पहले हम बस-ट्रेन में सफर पर जाते थे तो बाबा को याद करते जाते थे या बाबा की बातें व अनुभव आपस में शेयर करते थे। आजकल अधिकतर लोग मोबाइल या आई-पैड द्वारा गेम खेल कर या फिल्में देखकर समय बर्बाद करते हैं।

दुनिया में सबसे शक्तिशाली कौन?

पवित्रता एक बहुत बड़ी चीज है, निधि है। चांदी-सोना-हीरे कितने भी महंगे हों, फिर भी उनकी कीमत तो हो सकती है। पवित्रता की कोई कीमत लगा नहीं सकता, कितनी भी लगाओ, कम ही गिनी जाएगी इसलिए पवित्रता को अमूल्य खजाना कहा गया है। कुमार, कुमार से अधर-कुमार बन सकता है, कुमारी, कुमारी से अधर-कुमारी बन सकती है परन्तु अधर-कुमार, कुमार नहीं बन सकता है और अधर-कुमारी, कुमारी नहीं बन सकती है! इसलिए ऐसे शक्तिशाली कुमार-कुमारियों को आज बचाना है। बाबा भी कहते हैं, जिस सेन्टर पर कुमार-कुमारियाँ अधिक हैं वह हरा-भरा रहता है, सेवा में भी तेजी आती है। तो आइये, कुमार-कुमारी बचाओ अभियान शुरू करने के लिए कुछ बातों पर चर्चा करें –

आधुनिक मेनकाएँ और रम्भाएँ

यादगार ग्रन्थों में लिखा है, विश्वामित्र के कठोर तप की ज्वाला ने जब देवताओं को हिला दिया तब मेनका तथा रम्भा नामक अप्सराओं को विश्वामित्र के तप को भंग करने के लिए भेजा गया। मेनका ने विश्वामित्र को अपने

मायाजाल में फंसा ही लिया और उसका तप भंग हो गया। आजकल के ये सोशल एप्स क्या हैं? क्या ये आधुनिक मेनकाएँ तथा रम्भाएँ नहीं हैं, जो किसी की भी पवित्रता क्षण भर में भंग कर सकते हैं? सिर्फ एक बटन दबाओ और कई मेनकाएँ तथा रम्भाएँ हाजिर हो जाती हैं। कुमार-कुमारियों को इसका बोध तब होता है जब वे मायाजाल में अच्छी तरह फँस चुके होते हैं तथा माया उन्हें गिरा चुकी होती है। माया ने टी.वी., कम्प्यूटर तथा इन्टरनेट जैसे ब्रह्मास्त्र तो चला ही दिए लेकिन जब उसने देखा कि भगवान की श्रीमत पर चलने वाले अनेक कुमार-कुमारियाँ इनसे काफी बचे हुए हैं तो उसने अपना अंतिम दांव लगाया और अब मोबाइल फोन तथा सोशल एप्स रूपी ब्रह्माण्ड-अस्त्र चला दिया जिससे कोई भी बच न सके।

बाबा ने हाथ उठवाया

एक कुमार भाई ने पिछले वर्ष अपना फेसबुक एकाउंट खत्म कर दिया तथा व्हाट्स-एप भी इस्तेमाल करना बंद कर दिया। उसे महसूस हुआ कि ये दोनों एप्स उसका समय बर्बाद करते हैं और वह इनके अधीन-सा हो जाता है। जब कुमारों की भट्ठी में मधुबन गया, तो एक क्लास में पूछा गया कि कौन समझता है कि ये सोशल एप्स समय बर्बाद करते हैं। तो सभी कुमारों ने (2000-3000) हाथ उठाया। बाबा भी देख ही रहे थे। फिर पूछा गया, कौन प्रतिज्ञा करता है कि आज से इन सभी सोशल एप्स का इस्तेमाल नहीं करेंगे? तो लगभग सभी ने हाथ उठाया। इस कुमार ने भी यह सोचकर हाथ उठाया कि अनेक बार तो बाबा ने जॉब व क्लाइंट्स दिलाये हैं, तो इन सोशल एप्स पर मुझे अपना समय बर्बाद करने की क्या जरूरत है, आगे भी बाबा ही दिलाएगा। उस दिन से आज तक कई महीने हो चुके लेकिन उस कुमार भाई ने किसी भी सोशल एप का प्रयोग नहीं किया। यहाँ तक कि कम्प्यूटर पर भी अपने सोशल एकाउंट में लॉग-इन तक नहीं किया, चाहे किसी ने भी मैसेज भेजे हों।

तो अगर एक कुमार कर सकता है, तो क्या हम सभी नहीं कर सकते? अगर बिल्कुल बंद नहीं भी कर सकते तो इन सोशल एप्स का इस्तेमाल न्यूनतम करें अर्थात् 24 घंटों में 10-15 मिनट से अधिक नहीं। वह भी सेवा प्रति। संगमयुग का एक-एक पल कितना कीमती है, अगर हम ऐसे ही सोशल एप्स पर समय बर्बाद करते रहे तो भविष्य कमाई जमा नहीं कर पायेंगे और कभी भी माया के अधीन होकर उल्टा कर्म कर लेंगे।

साधारण चपरासी होता

हमारे सेन्टर पर एक पुराना कुमार भाई है जिसने आज तक कोई मोबाइल नहीं खरीदा है हालांकि वह सक्षम है। जब उस भाई से पूछा गया कि वह मोबाइल क्यों नहीं खरीद लेता, तो उसने एक कहानी सुनाई। कहानी ऐसी थी कि एक व्यक्ति एक कंपनी में चपरासी की नौकरी के इंटरव्यू के लिए गया। कंपनी मालिक को वह पसंद आया, उसे नौकरी पर रख भी लिया और उससे उसका ई-मेल एड्रेस मांगा। जब उसने कहा कि उसके पास ई-मेल एड्रेस नहीं है, तो मालिक ने उसे नौकरी नहीं दी। वह व्यक्ति हिम्मत नहीं हारा, उसने ठान लिया कि वह ई-मेल के बिना ही आगे बढ़कर दिखायेगा। वह छोटी-मोटी चीजें बेचकर, धीरे-धीरे एक जानी-मानी ट्रान्सपोर्ट कंपनी का मालिक बन गया। एक बार किसी पत्रकार ने उसका इंटरव्यू लिया, तो उससे उसका ई-मेल पूछा। उसने कहा कि उसके पास ई-मेल नहीं है। पत्रकार ने कहा, ई-मेल के बिना ही आप इतनी बड़ी कम्पनी के मालिक बन गए, ई-मेल होता तो पता नहीं क्या बन जाते! इस पर उस व्यक्ति ने हँसते हुए कहा कि मेरे पास इ-मेल होता तो आज मैं किसी ऑफिस में साधारण-सा चपरासी होता।

अगर यह सोशल एप्स इस्तेमाल न करें तो क्या करें?

बजाय फेसबुक या व्हाट्स-एप ग्रुप ज्वाइन करके समय बर्बाद करने के, सेन्टर के कुमार-कुमारियाँ मिलकर निमित्त बहन की अनुमति लेकर, सप्ताह में एक या दो दिन, 1-2 घंटे के लिए सेंटर पर ही स्व-उन्नति के लिए कुछ

प्रोग्राम तथा संगठित योग रख सकते हैं। इसमें योग भी हो जाएगा, उमंग-उत्साह भी रहेगा, संगठन का बल भी मिलेगा, कुछ करने का होमवर्क भी मिलेगा और बाबा की मदद भी मिलेगी। आप कहेंगे, फेसबुक या व्हाट्स-एप पर, ब्र.कु.ग्रुप्स में चैट करके भी स्व-उन्नति हो सकती है लेकिन उसमें योग नहीं किया जा सकता और फिसलने के लिए सिर्फ एक बटन दबाना काफी होता है। कई बार तो बटन दबाये बिना ही किसी की भेजी हुई गलत चीज देख व पढ़ लेते हैं। सेन्टर जैसे वातावरण व वायब्रेशन भी ऑनलाइन नहीं मिल सकेंगे। आप अपनी टीचर की अनुमति से ज्ञान-योग के कार्यक्रम कर रहे हैं तो बाबा की भी पूरी मदद मिलेगी।

वास्तव में देखा जाए तो सच्चा सोशल नेटवर्क तो आपस में मिलने से ही होता है। ऑनलाइन सोशल नेटवर्क तो उनके लिए है जो किसी से भी मिलते नहीं, किसी से आमने-सामने, खुलकर बात नहीं करते या किसी कारण-वश उन्हें अकेले रहना पड़ता है लम्बे समय के लिए। हमारे पास तो अपना दैवी परिवार ही इतना बड़ा सोशल नेटवर्क है कि किसी ऑनलाइन सोशल नेटवर्क की आवश्यकता नहीं है।

क्या फेसबुक ग्रुप्स, व्हाट्स-एप ग्रुप्स, लिंक्ड-इन ग्रुप्स, ट्विटर चैट्स आदि भी खराब हैं?

कई भाई-बहनें ऐसे ग्रुप्स पर बाबा की मुरली, गीत, कवितायें व अन्य आध्यात्मिक आर्टिकल्स आदि की लेन-देन करते हैं। थोडा समय चैट किया व कुछ पढ़ लिया, वह ठीक है, अधिक से अधिक 10-15 मिनट, इससे ज्यादा नहीं। कुछ अन्य भाई-बहनें ट्विटर व लिंक्ड-इन पर जॉब आदि खोजते हैं लेकिन वहाँ भी 10-15 मिनट से अधिक समय देने की जरूरत नहीं होती। फिर भी आप अपनी निमित्त बहन से पूछकर इनका प्रयोग श्रीमत अनुसार करें तो बाबा की मदद मिलेगी और आपको जॉब यूं ही मिल जायेगा। आजकल एक नए प्रकार की नौकरी निकली है सोशल मीडिया मैनेजर नाम से। जो कोई ऐसी जॉब करते हैं, उन्हें तो सोशल मीडिया पर ही रहना पड़ता है 8-10 घंटे क्योंकि उनका तो जॉब ही होता है किसी कम्पनी के सोशल एकाउंट्स संभालना।

क्या फोन या मोबाइल पर अधिक बातें करने से भी नुकसान होता है?

व्यापार हेतु हमें फोन या मोबाइल अधिक इस्तेमाल करना पड़ता है तो वह अलग बात है। उसके अलावा, अगर हम बाबा की श्रीमत अनुसार फोन या मोबाइल का इस्तेमाल करते हैं तो ठीक है लेकिन आप देख लें, चेक कर लें कि बाबा की श्रीमत का उल्लंघन तो नहीं कर रहे हैं? आपस में बातें करने के लिए जो श्रीमत है, वही श्रीमत फोन व मोबाइल के लिए भी लागू होती है। मुख्य बात है कि व्यर्थ व परचिन्तन की बातें नहीं होनी चाहिएँ। बाबा की स्पष्ट श्रीमत है कि जब कोई दो आपस में बातें करते हैं, तो तीसरे की कमजोरी की, गलती की या परचिन्तन की बातें नहीं चलनी चाहियें। यह पाप कर्म है और जहाँ पाप है, वहाँ बाप नहीं है। अगर फोन पर हम बाबा की बातों की, मुरली की, अनुभवों की लेन-देन करते हैं तो ठीक है। इसमें बाबा की मदद और दुआयें भी मिलेंगी और हमें खुशी भी होगी।

लौकिक फेसबुक में रहना है या भगवान की सेफबुक में?

फेसबुक पर मनुष्यों से चैट करते हैं लेकिन ऐसा ही करते रहे और संगम पर भी भगवान से चैट न किया तो क्या किया? मनुष्य तो हमें हर जन्म में मिलेंगे लेकिन क्या भगवान हर जन्म में, वह भी बाप के रूप में मिलेंगे? क्या करना है, क्या नहीं करना है – निर्णय हमारे हाथ में है। आम मनुष्यों की तरह फेसबुक पर रहना है या शिवबाबा की सेफबुक में अर्थात् दिल की डिब्बी में? सोच-समझ कर निर्णय लेना। कहीं ऐसा न हो कि बाद में पछताना पड़े, हम भी पछताने वालों की क्यू में खड़े हों और यह सोचें कि काश हमने भी बाबा को अच्छी तरह से याद किया होता और उनकी श्रीमत पर चले होते, तो आज रोना न पड़ता। बाबा कहते हैं, समय व्यर्थ गँवाने वालों को ज़ार-ज़ार रोना पड़ेगा इसलिए सावधान हो जाओ और श्रीमत पर चलो। ❖

आत्महत्या नहीं, आत्मानुभूति

ब्रह्माकुमार अमन, मंडावली (दिल्ली)

बात उन दिनों की है जब मैंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। तब मैं अपने लौकिक नाना जी के पास झारखण्ड में रहता था। मैट्रिक परीक्षा में मेरे 91% अंक आए और मेरा नामांकन बोकारो में 'चिन्मया विद्यालय' में हो गया। पुराने सहपाठी पीछे छूट गए और मैं किराए पर कमरा लेकर रहने लगा। पहले कभी अकेले रहने का अनुभव तो था नहीं, नई जगह, नया माहौल, नया स्कूल, नए लोग – सब कुछ बदल-सा गया। साथ ही पढ़ाई का स्तर भी काफी कठिन होता गया।

मनोदशा हुई कमजोर

वहाँ बाकी छात्रों के माता-पिता बीच-बीच में उनसे मिलने आया करते थे परन्तु मेरी लौकिक माताजी का निधन, जब मैं दो वर्ष का था तब ही हो गया था। साथ ही, लौकिक पिता से मेरी न तो कभी मुलाकात हुई थी और न ही बातचीत होती थी। ऐसी स्थिति में मुझे अकेलेपन का एहसास होने लगा और पढ़ाई में ध्यान लगना बंद हो गया। अतीत का चिंतन और भविष्य की चिंता मन को खाने लगी। कोई इतना विश्वसनीय मित्र भी नजर नहीं आता था जिसे खुलकर अपने मन की बातें बता सकूँ। इस तरह निरंतर चल रहे नकारात्मक विचारों ने मेरी मनोदशा को कमजोर कर दिया। फिर यह संकल्प आने लगे कि ऐसी जिंदगी जीने से भी क्या फायदा, इससे तो अच्छा है कि मैं कहीं जाकर मर ही जाऊँ। भगवान है भी या नहीं, पता नहीं, अगर भगवान है तो आखिर वह मेरी मदद क्यों नहीं कर रहा? मैंने दो बार आत्महत्या का प्रयास भी किया परन्तु सौभाग्यवश विफल रहा। मैंने 12वीं की परीक्षा ही छोड़ दी और जीवन बिल्कुल अंधकारमय हो गया।

मिला परमात्मा का परिचय एवं ज्ञान का प्रकाश

यह बात जब मेरी मामी जी को पता चली तो उन्होंने कहा कि आप ब्रह्माकुमारी सेन्टर पर जाकर सात दिन का कोर्स करो, आपके जीवन की गाड़ी फिर से पटरी पर आ जाएगी। कुछ दिनों के पश्चात् मैंने अप्रैल, 2010 में सेन्टर पर जाकर साप्ताहिक कोर्स किया। कोर्स करते ही मेरा व्यर्थ चिंतन समाप्त हो गया और मन को श्रेष्ठ सकारात्मक विचारों का खजाना मिल गया। मुझे असीम शांति का अनुभव हुआ और मन को सच्चा मीत, दिलाराम शिव बाबा मिल गया जिसको मन की हर बात बता कर मैं बिल्कुल हल्का होने लगा। सारी चिंताएँ, सारा अतीत पीछे छूट गया और वर्तमान में जीना आ गया। फिर राजयोग के अभ्यास से पढ़ाई में भी मन लगने लगा और साथ ही ड्रामा के ज्ञान से जीवन की घटनाओं को साक्षी होकर देखना भी मैंने सीख लिया। मन यह गीत गाने लगा, 'हमें आप बाबा ऐसे मिले हो कि जैसे नई ज़िन्दगी मिल गई है...।'

परमात्म ज्ञान से हुआ परिवर्तन

फिर अगले वर्ष मार्च, 2011 में मैंने 12वीं की परीक्षा दी और प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ। उसके पश्चात् लौकिक पिता से भी मेरे संबंधों में मधुरता आ गई। साथ ही मेरा दाखिला नोएडा में इंजीनियरिंग कॉलेज में भी हो गया। वहाँ जाकर भी मैं राजयोग का अभ्यास करता रहा। मैंने किराए पर कमरा लिया और लौकिक पढ़ाई के साथ-साथ आध्यात्मिक पढ़ाई पढ़ने रोज सेन्टर पर जाने लगा। इस तरह मुझे दिव्य परिवार का संग मिल गया और मेरी आध्यात्मिक उन्नति को जैसे पंख लग गए। फिर समय प्रति समय ईश्वरीय सेवा का चांस भी मिलने लगा।

मिला प्रभु मिलन का सुख

इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान ही मुझे मधुबन (ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय, आबू पर्वत) आने का सुअवसर प्राप्त हुआ। पहली बार मधुबन आते ही यहाँ के अलौकिक वातावरण और ईश्वरीय परिवार के प्यार की अमिट छाप मुझ पर पड़ गई। ऐसा लगने लगा जैसे मैं अपने असली घर में आ गया हूँ। बापदादा से प्रथम बार 2 फरवरी, 2013 को मधुर मिलन मनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वह अनुभूति ऐसी थी जिसे शब्दों में वर्णन करना संभव नहीं। मन खुशी में नाचने लगा और एक ही बात दिल से निकलने लगी, 'पाना था सो पा लिया।' अपनी पढ़ाई के दौरान मुझे चार बार मधुबन आने का सुअवसर मिला जिससे मन दिव्यता से भरपूर हो गया। जुलाई, 2015 में मेरी इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी हो गई और मैंने अपने कॅालेज में, अपनी ब्रांच में दूसरा स्थान प्राप्त किया। इस तरह बाबा ने लौकिक और अलौकिक जीवन में बैलेन्स बनाए रखने का चमत्कारी पाठ भी सिखला दिया।

अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि इस ईश्वरीय मार्ग पर चलकर जो सुख-शांति एवं आनंदमय जीवन की प्राप्ति होती है वह इस संसार में किसी वस्तु, वैभव व व्यक्ति से हो ही नहीं सकती। विशेषकर हमारी युवा पीढ़ी, जो आजकल भौतिकवाद की तरफ आकर्षित होकर मानसिक स्थिति को कमजोर बना रही है, उन्हें यह ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त कर राजयोग का अभ्यास जरूर करना चाहिए ताकि वो आत्महत्या जैसा गलत कदम न उठाएँ एवं नशीले पदार्थों का सेवन करने के दुश्चक्र से बचकर जीवन में आत्मानुभूति द्वारा सकारात्मकता को अपना सकें। ❖

विशेष सूचना

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का दैवी परिवार अपने **80वें वार्षिकोत्सव** को मनाने में अत्यन्त गौरव का अनुभव कर रहा है। इस विश्व स्तरीय आध्यात्मिक संस्था ने गत 80 वर्षों से मानवता की अद्‌भुत सेवा करते हुए अपनी शानदार लम्बी यात्रा सफलतापूर्वक तय की है। संस्था के 80वें वार्षिकोत्सव के शुभावसर पर **''विश्व परिवर्तन के लिए परमात्म ज्ञान''** विषय पर **अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम** का आयोजन **दिनांक 26 से 30 मार्च, 2017** तक शान्तिवन परिसर, आबू रोड, राजस्थान में किया जा रहा है।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के 80 वर्षों के स्वर्णिम काल की प्राप्तियों का इतिहास, परमपिता परमात्मा एवं उनके साकार माध्यम पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के बेहद उत्कृष्ट मार्गदर्शन का परिणाम है। आदरणीय दादियों के सतत् एवं साहसपूर्ण सफल प्रयास तथा वरिष्ठ बहनों-भाइयों के सराहनीय योगदान से संस्था आध्यात्मिकता के उच्चतम शिखर पर पहुंचने में सफल हुई है।

इस ऐतिहासिक महासम्मेलन में पूरे भारत एवं विश्व के भिन्न-भिन्न स्थानों से विज्ञान, तकनीकी, राजनीति, धर्म, आध्यात्मिकता, न्यायपालिका, संचार माध्यम, उद्योग, कला एवं संस्कृति, खेल, चिकित्सा, शिक्षा, अर्थ एवं वाणिज्य, प्रशासन इत्यादि क्षेत्रों के अतिविशिष्ट व्यक्ति उपस्थित रहेंगे।

इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की आध्यात्मिक शिक्षाओं, धारणाओं एवं सेवाओं को एक पर्व के रूप में मनाने की पूर्व नियोजित योजना है जिसमें परमात्म संदेश को गीत, संगीत, नाटक, नृत्य, लाइट एवं साउण्ड शो इत्यादि के माध्यम से प्रस्तुत किया जाएगा।

आइये हम सभी दैवी परिवार मिलकर पवित्रता, शान्ति एवं समृद्धिपूर्ण सतयुगी दुनिया की संकल्पना को साकार करें।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

Brahma Kumaris, Value Education Office
Anand Bhawan, 3rd Floor, Shantivan Campus,
Abu Road, Rajasthan (India) - 307 510
Email: bkiccf@gmail.com
Mobile: +91 94141 54848, +91 94141 52358
Online Registration: http://accom.bkinfo.in

मनुष्य के संस्कार ही हैं नवीनता के, वो हर बात में नवीनता चाहता है। चाहे खाने में, पहनने में, घूमने में, देखने में, हर चीज में नवीनता चाहिए उसे। जो मनुष्य नवीनता को नहीं अपनाते उन्हें अक्सर कह दिया जाता है, ''क्या आप अभी तक पुरानी सोच में ही जी रहे हो?''

एक तरफ हमने चीजें तो नयी अपना लीं परंतु अभी भी हम वही पुरानी, घिसी-पिटी, विकारी, नकारात्मक सोच लिए जी रहे हैं। उसे बदलने के लिए परमपिता परमात्मा शिव हमें नया ज्ञान दे रहे हैं। ऐसा ज्ञान जो आज तक न किसी ने दिया था, न देंगे। ऐसी नई सोच जो न किसी ने सोची होगी, न सोचेंगे। यह एक क्रांतिकारी सोच है।

दुखदाई आदत का बदलाव क्यों नहीं?

कई बार कोई चीज जब पुरानी हो जाती है तो हम सोचते हैं कि कुछ समय बाद इसे बदल लेंगे। अगर वो चीज बहुत टूटी हुई है और उपयोग के समय हमें धोखा देती है तो हम उसे जोड़कर (चिपकाकर) काम चलाते रहते हैं और फिर तंग होकर कहते हैं, ''बस, अब बहुत हो गया, अभी तो इसे बदलना ही पड़ेगा।'' फिर उसकी जगह नई चीज खरीदते हैं और वो भी उत्तम श्रेणी की ताकि बार-बार खराब ना हो। बाहरी चीजों को तो बदल लेते हैं परन्तु असल में जरूरत है आंतरिक बदलाव की। कोई पुरानी आदत जो बार-बार हमें धोखा दे रही हो अर्थात् जिससे हम भी दुखी, सामने वाला भी दुखी, दूसरों से संबंध भी बार-बार बिगड़ते रहते हैं, फिर भी क्यों नहीं हम उस आदत को बदल लेते हैं? ऐसा क्यों नहीं सोचते कि एक महीने या एक साल के अन्दर मैं इसे बदल करके ही रहूँगा और इसमें कोई खर्चा भी तो नहीं है। हम सोचते हैं, परिस्थितियाँ बदल जाएँ परंतु परिस्थितियाँ तब तक नहीं बदलेंगी जब तक हम उनसे सबक नहीं सीख लेते। सबक सीखना माना स्वयं में बदलाव लाना।

अच्छे की तलाश न करें, स्वयं अच्छे बनें

हम पुरानी, टूटी, बिगड़ी चीजों का तथा बुरे व्यक्तियों का बदलाव चाहते हैं जैसे कि यह नेता बुरा है, इसे बदलें, यह प्राचार्य बुरा है या हमारा प्रबन्धक या बॉस बुरा है, उसे बदलें परंतु हम यह नहीं जानते कि हमारे अंदर कितने बुरे विचार, कितने बुरे संस्कार हैं, सर्वप्रथम तो उन्हें बदलना चाहिए। अच्छी चीजें, अच्छे व्यक्ति हमारे जीवन में आ जाएँ, यह हम चाहते हैं लेकिन हम अपने से प्रश्न पूछें कि

हम ऐसा क्यों चाहते हैं? शायद इसीलिए कि हमारा कार्य सहज और तीव्रगति से पूरा हो, अच्छे व्यक्ति के साथ समय अच्छा बीते परंतु अगर हम चाहते हैं कि हमारा सारा जीवन ही अच्छा बीते तो उसके लिए हमें स्वयं को बदलना पड़ेगा क्योंकि सबसे ज्यादा अपने आप के साथ रहने वाले हम स्वयं ही हैं। किसी ने क्या खूब कहा है, ''अच्छे व्यक्तियों की तलाश में न रहें बल्कि स्वयं को ही इतना अच्छा बना लें जो किसी और की तलाश पूरी हो जाए।'' स्वयं को बदलने से सारा जीवन सुखमय, आनंदमय हो जाता है, हम स्वयं के ही मित्र बन जाते हैं और यदि बुराइयाँ हैं तो स्वयं के ही शत्रु बन जाते हैं। जीवनभर कोई हमारे साथ रहे या ना रहे लेकिन हमारे स्वयं के अच्छे विचार और अच्छे संस्कार सदैव साथ रहते हैं।

नई सोच अपनाकर देखिए

नई सोच अर्थात् क्या? किसी ने कुछ अपशब्द कहे और विचार आया कि इसे कुछ सुना दूँ, ये है पुरानी सोच। ऐसी सोच तुरंत परिवर्तन करें कि जाने दो, मुझे कुछ भी नहीं बोलना है, दुबारा जब यह व्यक्ति मिलेगा तो उससे प्यार से ही बात करनी है। फिर देखना उसका परिणाम, एक बार प्रयत्न कीजिए। क्योंकि ये है परमात्मा पिता की बताई हुई नई सोच। एक बार अपनाकर देखिए। आजकल जब कोई कंपनी कोई नयी चीज मार्केट में लाती है तो यही बोलती है, एक बार प्रयोग करके देखो। कम्पनी की चीजें तो नश्वर हैं, साल दो साल के बाद पुरानी भी हो जाएँगी, खराब भी हो सकती हैं लेकिन परमात्मा का बताया हुआ फार्मूला कभी भी पुराना नहीं होगा, उस फार्मूले का नाम है सकारात्मकता।

परमात्मा आते हैं नई सोच लेकर

संसार में इतनी सारी नई चीजें उपलब्ध होते हुए भी संसार की हालत बिगड़ती जा रही है तो अवश्य ही संसार की हालत में बदलाव लाने के लिए सोच को नया बनाना पड़ेगा। जरूरत है हर छोटी या बड़ी बात में सकारात्मक सोच की। कोई भी परिस्थिति आ जाए, कोई कुछ भी कहे, कुछ भी करे लेकिन हमें वही सोचना है जो परमात्मा ने हमें सिखाया है। आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप में सकारात्मक शक्ति है और परमात्मा सकारात्मक शक्तियों का स्रोत है। जब-जब सकारात्मकता की कमी अर्थात् अधर्म बढ़ जाता है तब-तब परमात्मा को इस धरा पर आना पड़ता है सकारात्मकता सिखलाने हेतु। परमात्मा पिता का ज्ञान नया, सत्य और सम्पूर्ण है जिससे ही नये युग की स्थापना संभव है। नयी सोच से ही नया संसार बनेगा। इसके लिए हम हरेक को छोटी-छोटी बातों से ही सकारात्मकता शुरू करनी होगी। दृष्टि, वृत्ति और कृति अर्थात् सोच, संकल्प और कर्म तीनों एक समान सकारात्मक हों, यही तो नवीनता है।

बुराई निकालें, अच्छाई डालें

सकारात्मकता रूपी यह नवीनता अपनाकर देखिए। कितना स्वयं को शान्ति और सुकून अनुभव होता है जो भौतिक चीजों से नहीं मिल सकता। सकारात्मकता से सृजनात्मक प्रवृत्ति (Creativity) बढ़ती है, उमंग-उत्साह बढ़ता है, स्वयं को स्वयं से बढ़ावा (Motivation) मिलता है, नये-नये अनुभव मिलते हैं, औरों के लिए उदाहरणमूर्त (Example) बन जाते हैं। कोई कह सकता है कि पुरानी सोच व पुराने संस्कार एक-एक करते इतने इकट्ठे हो गए हैं कि अब उन्हें बदलना भारी लग रहा है परंतु जैसे इकट्ठे हुए हैं ऐसे एक-एक करके निकालते जायेंगे तो आसान हो जाएगा। एक बात का ध्यान रहे, हम जो बुराई निकालें, उसकी जगह खाली न छोड़ें, तुरंत एक नयी बात अर्थात् सकारात्मक बात अपना लें, तभी संस्कार भी नए बनेंगे।

नवीन संस्कारों से सफलता मिलती है, सफलता खुशी दिलाती है, खुशी से ताकत मिलती है और उसी ताकत से हम आगे और नया कर सकते हैं तो जैसे यह एक चक्र...बन जाता है। एक के बाद एक नयी सोच, फिर नये संस्कार और फिर नया संसार आने में देरी नहीं लगेगी। ❖

जीवन जीने की नई राह मिली

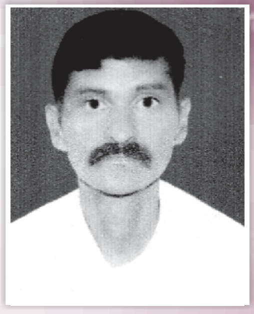

ब्रह्माकुमार जनक, शांति सरोवर, रायपुर (छ.ग.)

एक निजी कंपनी में मैं सुपरवाइजर के पद पर कार्य करता था। पैसे बहुत कमा लेता था पर गलत राह पर चलने के कारण सारे पैसे खर्च हो जाते थे। फिर किसी से उधार लेने पड़ते थे। प्रतिदिन 20 घण्टे शराब, सिगरेट और अन्य नशे की चीजें मेरे ऊपर हावी रहती थीं। जो नहीं करना था वो सब कुछ मैंने किया। मुझे लगता था कि मेरे सामने दस शीश वाला रावण भी छोटा है। मेरे व्यवहार से घरवाले तथा आस-पड़ोस के लोग बहुत परेशान थे। बच्चे ठीक से पढ़ाई नहीं कर पाते थे। मेरी युगल और दो बच्चे ब्रह्माकुमारी आश्रम में नियमित रूप से जाते हैं। उन्होंने मुझे भी वहाँ चलने के लिए कहा, जैसे-तैसे मैं तैयार हुआ, एक सप्ताह का कोर्स भी किया, एक महीने सेवाकेन्द्र पर क्लास भी की लेकिन बाहरी दुनिया की बुराइयाँ मेरा पीछा नहीं छोड़ रही थीं।

बाबा का होकर रह गया

एक दिन सेवाकेन्द्र की मुख्य निमित्त बहन ने मुझे बुलाया और मुझ पर विश्वास करके शांति सरोवर की एक सेवा की जिम्मेदारी सौंपी। शुरू में तो मुझे अच्छा नहीं लग रहा था लेकिन धीरे-धीरे बाबा की शक्ति मिलती गयी, ज्ञान-योग में मन लगता गया और सभी निमित्त बहनों के स्नेह की शुभ दृष्टि मुझ आत्मा पर पड़ी तो मैं सिर्फ बाबा का होकर रह गया। अब तो बाबा और बाबा की सेवा को छोड़कर कहीं भी जाने का मन नहीं होता। यहाँ पर रहते-रहते बहुत ज्ञान स्पष्ट हुआ और देखा भी कि यहाँ की बहनें बिना थके, बिना रुके, हँसते-हँसते, शिवबाबा की याद में, ब्रह्मा बाबा की राहों पर चलते निरंतर सेवा देती रहती हैं। उन्हें देख सेवा का और शौक चढ़ा।

गुण धारण करें, अवगुण नहीं

भक्ति मार्ग की कथा अनुसार, जिस प्रकार श्रीराम की विजय वानर सेना के बिना नहीं हो सकती थी, उसी प्रकार बाबा की सेवा भी बहनों के बिना अधूरी है। दुनिया में तो लोग कुछ भी कहते रहते हैं कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी आश्रम में नहीं जाना चाहिये, वहाँ सब कुछ छुड़ा देते हैं, परिवार से अलग कर देते हैं परन्तु मैं पूरे भारत के भाई-बहनों से कहना चाहूँगा कि ऐसा कुछ भी नहीं है। हर इन्सान में अच्छे गुण भी होते हैं और बुराइयाँ भी। एक शिक्षक अपने विद्यार्थी को समझाता है कि धूम्रपान करना बुरी आदत है लेकिन वही शिक्षक खुद धूम्रपान करता है तो विद्यार्थी को उसके कर्म पर ध्यान नहीं देना चाहिये। अगर कोई अच्छी बात समझाता है तो यह उसका अच्छा गुण है पर वह खुद नासमझी करता है तो यह उसका अवगुण है। हम अच्छे गुण को तो धारण करें पर अवगुण को नहीं। घर वाले या बाहर वाले जो भी मुझे जानते थे, यही कहते थे कि यह इंसान कभी भी सुधर नहीं सकता लेकिन जैसे ही शिवशक्ति की दृष्टि मुझ आत्मा पर पड़ी तो सभी हैरान हो गए कि ये कैसे सुधर गया। अब मैं धूम्रपान रहित हूँ। कहते हैं, जब जागो, तभी सवेरा लेकिन सवेरा भी तभी होता है जब किसी ब्रह्माकुमारी बहन के द्वारा ज्ञान की रोशनी फैले।

> बुरी संगत उस कोयले के समान है जो गर्म हो तो हाथ को जला देता है और ठंडा हो तो काला कर देता है

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
▸▸ E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125